R. K. Advertising
के माध्यम से 'जैन गजट' में
विज्ञापन बुक कराने हेतु
सम्पर्क करें-
शेखर चन्द पाटनी
राष्ट्रीय संवाददाता-जैन गजट
मो. 9667168267
रोहित कुमार पाटनी, डायरेक्टर
(आर. के. एडवरटाइजिंग)
मो. 8003892803
ईमेल
rkpatni77@gmail.com

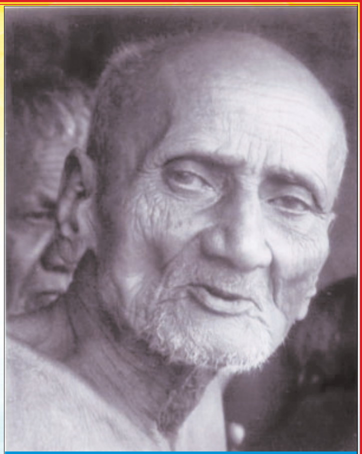

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

शिवराज चौहान ने आचार्य विशुद्ध सागरजी का आशीर्वाद प्राप्त किया **पृष्ठ 02 पर...**

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 31 अंक 34 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 23 जून 2025, वीर नि. संवत् 2551

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

।। श्री शांति-वीर-शिव-धर्म-अजित-वर्धमान-परम्पराचार्येभ्यो नमः ।।

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज

प्रथम पट्टाचार्य चारित्र चूड़ामणि आचार्य 108 श्री वीरसागर जी महाराज

द्वितीय पट्टाचार्य सिद्धांत संरक्षक आचार्य 108 श्री शिवसागर जी महाराज

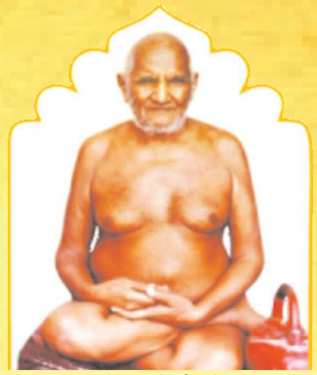

तृतीय पट्टाचार्य धर्म शिरोमणि आचार्य 108 श्री धर्मसागर जी महाराज

चतुर्थ पट्टाचार्य अभिक्षण ज्ञानपयोगी आचार्य 108 श्री अजितसागर जी महाराज

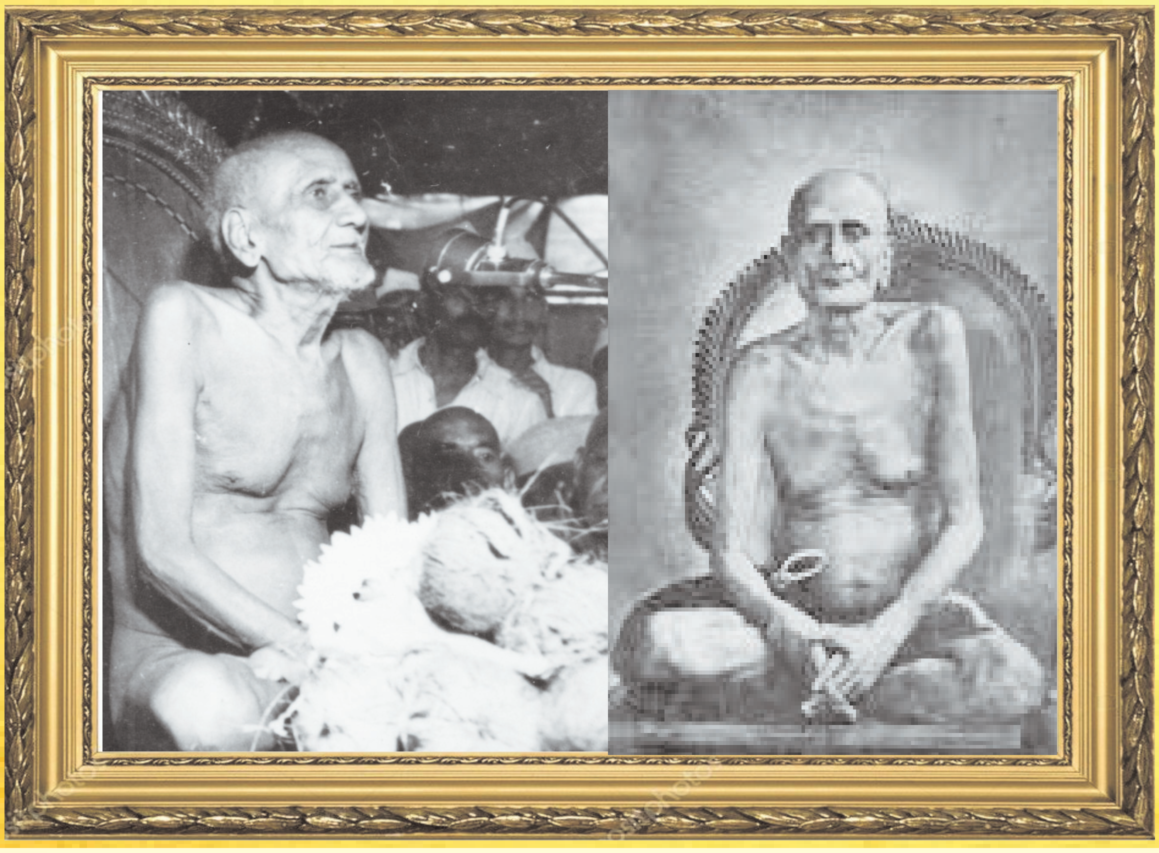

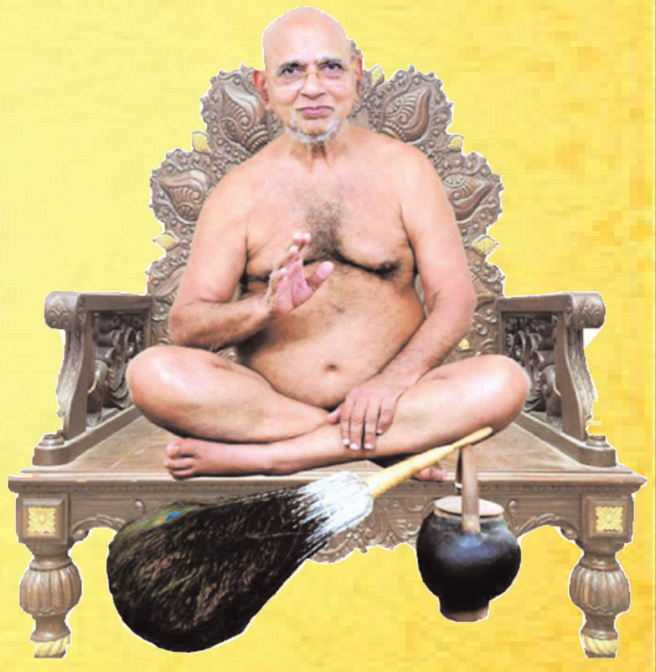

वात्सल्य वारिधि, जिनधर्म प्रभावक, राष्ट्र गौरव, पंचम पट्टाचार्य
108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज

बीसवीं सदी के महान दिगम्बर संत प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती परम पूज्य आचार्य श्री 108 शांतिसागर जी महाराज के आचार्य पद प्रतिष्ठापन शताब्दी महोत्सव 13 अक्टूबर 2024 से 3 अक्टूबर 2025 के उपलक्ष्य में उनके श्री चरणों में कोटि- कोटि शत् शत् वंदन, शत् शत् नमन्

पुण्यार्जक/नमनकर्ता
प्रकाशचन्द्र बड़जात्या-संतोष देवी, शैलेन्द्र- सुनीता, नीरज-निकिता एवं परिवार
श्रीनिवास रोडवेज प्रा. लि., चेन्नई/दिल्ली/कोलकाता

पट्टाचार्य अब महासंघ के गणाचार्य विशुद्ध सागर जी

गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज के पट्टशिष्य राष्ट्र गौरव चर्या शिरोमणि, पट्टाचार्य श्री 108 विशुद्ध सागर जी महाराज जिन-शासन के नील गगन में, चन्द्र-समान नयनों की निर्मलता, हृदय की ऋजुता, वाणी की विमलता, आचरण की पवित्रता वही है- उनकी विलक्षणता। जिनकी साधना के प्रत्येक क्षेत्र में दृष्टिगोचर होती है, वे हैं पट्टाचार्य श्री 108 विशुद्धसागर जी मुनि महाराज

–: शुभकामना :–

रत्नत्रय में उत्तरोत्तर वृद्धि हो। स्वस्थ्य व दीर्घ आयु जीवन की कामना। जिनधर्म व जिनशासन की अद्वितीय प्रभावना हो। विशुद्धि बढ़े। जल्द ही पंचम गति प्राप्त हों

परम पूज्य, राष्ट्र गौरव, चर्या शिरोमणि श्रमणाचार्य श्री 108 विशुद्ध सागर जी महामुनिराज के इंदौर में पट्टाचार्य बनने के सुअवसर पर हम यही मंगला कामना करते हैं कि आचार्य श्री के रत्नत्रय की उतरोत्तर वृद्धि हो, आचार्य श्री के स्वस्थ्य व दीर्घ आयु जीवन की कामना करते हैं। आचार्य श्री के द्वारा जिनधर्म व जिनशासन की अद्वितीय प्रभावना हो, आचार्य श्री की विशुद्धि बढ़े, ऐसी हम कामना करते हैं।

-: पुण्यार्जक/नमनकर्ता :-

लूणकरण कासलीवाल, किशनगढ़
विमल वैद, किशनगढ़
स्व. बाबूलाल बैद, किशनगढ़
अजय कुमार जैन, किशनगढ़
ब्रह्मचारिणी पवन देवी अजमेरा, किशनगढ़

पवन कुमार बड़जात्या, मौजमाबाद वाले
महावीर प्रसाद अजमेरा, जोधपुर
आदिश्री ग्रेनाईट प्रा. लि., किशनगढ़
आदिश्री इलैक्ट्रोमेक प्रा. लि., किशनगढ़
श्रीमती ऊषा बाकलीवाल, किशनगढ़

विज्ञापन प्रेषकः R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

हेड ऑफिस-मदनगंज किशनगढ़, ब्रांच आफिस- जयपुर, इंदौर, सुरत, बाम्बे, कोलकाता, गुवाहाटी

केन्द्रीय मंत्री शिवराज चौहान ने आचार्य विशुद्ध सागरजी का आशीर्वाद प्राप्त किया

राजेश जैन दद्दू

विदिशा। ''अधिकारों से विचारों में शांति नहीं आती, जहां विचारों की शांति होती है वहां अधिकार नहीं होते'' उपरोक्त उद्गार चर्या शिरोमणि आचार्य विशुद्ध सागर महाराज ने श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान के चतुर्थ दिवस पर अपनी मंगल देशना में व्यक्त किए। इस अवसर पर केन्द्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भी विधान महोत्सव में पधारकर श्रमण संस्कृति के महामहिम आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी के पाद प्रक्षालन कर आशीर्वाद प्राप्त किया एवं इस अवसर पर आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी द्वारा रचित ''विचार'' ग्रंथ का विमोचन भी किया। समारोह के मुख्य अतिथि शिवराज सिंह चौहान जो कि भारत सरकार के कृषि मंत्री एवं मध्य प्रदेश शासन के पूर्व मुख्यमंत्री हैं, को सूत्र देते हुये कहा कि ''देखो जानो और जाने दो'' की रीत नीति से चलोगे तो कभी आपको कष्ट नहीं होगा। आचार्य श्री ने कहा कि ''किसी के प्राण लेना भारत का धर्म नहीं है''।

जो देश विश्व का विनाश करने की धमकी दे रहे हैं उन देशों को समझ लेना चाहिये कि भारत ने ''आचरण'' पर विश्वास रखा है और जिसने आंख गरम की उन आंखों को ठंडा भी किया है, यही दृष्टि मोक्षमार्ग की है। आचार्य श्री ने कहा कि भारत की इस भूमि पर भगवान ऋषभदेव ने राज्य किया और जिस देश को कभी भरत चक्रवर्ती ने सम्हाला उस देश का नाम इन्ही। चक्रवर्ती के नाम से भारत पड़ा। आचार्य श्री ने शिवराज सिंह जी को सम्बोधित करते हुये कहा कि ''बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ'' यह आंदोलन अभी का नहीं है, यह सूत्र तो भगवान ऋषभदेव के शासन काल का सूत्र है। 60 मिनट के इस प्रवचन को मुख्य अतिथि शिवराज सिंह जी भी एकटक सुनते रहे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि संतों का सान्निध्य मिलना दुर्लभ सौभाग्य है, जब मेरे से पूंछा गया कि आपके पास कितना समय है तो मैंने कहा समय ही समय है। मैं आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का शिष्य हूं और आज तो आपके विचार ग्रंथ का विमोचन है और सारा खेल विचारों का ही है। यह सारा संसार विचारों की ही उत्पत्ति है। अच्छे विचारों से जीवन है तथा बुरे विचारों से ही पतन है।

मुख्य अतिथि मंत्री जी ने कहा कि मैं यहां पर कोई मंत्री के रुप में नहीं आया मैं, तो आप से आशीर्वाद प्राप्त करने आया हूं, मैं तो आचार्य विद्यासागरजी महाराज का शिष्य आपके चरणों में नतमस्तक होने और नमोस्तु शासन जयवंत हो करने आया हूं।

उन्होंने देश और दुनिया की बात करते हुये कहा कि जिस भाषा में बड़े नेता बोल रहे हैं यह उनके बोलने का अधिकार नहीं है। रुस, इजरायल और ईरान, हमास आदि देशों का नाम लेते हुये कहा कि चारों ओर अशांति है, युद्ध के नगाड़े चारों ओर बज रहे हैं। महाविनाशकारी अस्त्रों का जखीरा सामने है। समझ में नहीं आता यह दुनिया सही दिशा में चलेगी कैसे?

उन्होंने कहा कि भारत अहिंसा परमो धर्मः के रास्ते पर चलने वाला देश है। उन्होंने आशीर्वाद चाहा कि किसान कल्याण के क्षेत्र में तथा बेटियों के लिये कार्य कर सकूं। उन्होंने कहा कि संचालिका कीर्ति की तारीफ करते हुये कहा कि मेरे दो बेटे थे और अपने घर में बहु नहीं बेटी लेकर आया हूं। इस अवसर पर श्री सकल दि. जैन समाज के पदाधिकारियों ने शाल, श्रीफल एवं मोमेंटो से उनका स्वागत किया तथा आचार्य श्री द्वारा लिखित ग्रंथ ''विचार'' का विमोचन श्री सुरेशचंद्र जैन एडवोकेट सहित अध्यक्ष शैलेंद्र चौधरी, महामंत्री प्रदीप एल आई सी, सौरभ लंदन, जय कुमार जैन, अविनाश जैन सहित सभी पदाधिकारियों ने किया। आभार व्यक्त स्वागताध्यक्ष संजय सेठ ने किया। इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के कई वरिष्ठ नेता एवं पार्टी के पदाधिकारी भी मौजूद रहे।

फेडरेशन ऑफ जैन एसोसिएशन इन नार्थ अमेरिका (जैना) का द्विवार्षिक अधिवेशन 2/3/4 जुलाई को शिकागो में

जैना अमेरिका में स्थित लगभग 150 जैन मंदिरों की पेरेन्ट बाडी है जिसका हर 2 साल में अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन होता है। इस वर्ष यह अधिवेशन शिकागो (यूएसए) में 2/3/4 जुलाई 2025 को आयोजित किया गया है। इस सम्मेलन में सम्पूर्ण अमेरिका के अतिरिक्त पूरे विश्व से लोग शामिल होते हैं। यह एक मात्र संस्था है जिसमें जैन समाज के सभी वर्गों के प्रतिनिधि व श्रमण श्रमणियां शामिल होते हैं। अगस्त 2024 से इसका रजिस्ट्रेशन प्रारंभ हुआ एवं अब जुलाई 25 में 4 दिवसीय कार्यक्रम आयोजित होगा। लगभग 4000 प्रतिनिधि इस महोत्सव में शामिल होने जा रहे हैं। धर्म, समाज, जीव

दया, मानवता व विभिन्न विषयों पर उपयोगी चर्चा अधिवेशन के दौरान होती है। युवाओं के लिये प्रथक संस्था है जिसमें वे एक दूसरे से मिलकर अपने विचार शेयर करते हैं। श्री भा. दिगम्बर जैन महासभा, श्री दिगम्बर जैन महासमिति व जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन के प्रतिनिधि के रुप में इन्दौर म. प्र. से टी. के. मंजु वेद, पुत्री प्रियंका जैन के साथ परिवार सहित इस कार्यक्रम में शामिल हो रहे हैं। एक स्थानीय कार्यक्रम में विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी द्वारा उन्हें सम्मानित कर विदाई दी गई तथा इन्दौर स्थित श्रमणाचार्य श्री विभव सागर जी महाराज, पूज्य सागर जी महाराज व सुयश सागर जी महाराज ने वेद दम्पत्ति को आशीर्वाद दिया।

समाज से विनम्र निवेदन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा की जा रही धार्मिक एवं सामाजिक कल्याण की योजनाओं में दान देकर सहयोग प्रदान कीजिये। संस्था को 12 I/80G (प्रमाण पत्र संख्या URN-AAHTS7154EF2025101) एवं CSR-1 (प्रमाण पत्र संख्या -SRN-N30616809) के तहत आयकर में छूट प्राप्त है। संपर्क : मोबाइल/वाट्सअप - 9415008344, 9415108233, 7607921391, 7505102419

SHRI BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN MAHASABHA
ACCOUNT NO. - 2405000100033312
RTGS/IFSC/NEFT Code - PUNB0185600 PUNJAB NATIONAL BANK, RAJENDRA NAGAR, Lucknow
Pin Code - 226004 (U.P.)

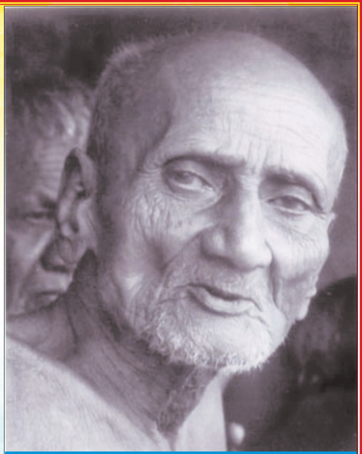

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

151 फुट के पत्र के माध्यम से गुरुदेव से विनती पृष्ठ 05 पर...

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 31 अंक 34 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 23 जून 2025, वीर नि. संवत् 2550

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

आचार्यश्री विद्यानंद जी जन्म शताब्दी पर डाक टिकट एवं सिक्का जारी होगा

गोम्मटगिरि तीर्थ स्थापना में रही मुख्य भूमिका, इंदौर से रहा गहरा नाता

इंदौर (ओम पाटोदी)। 22 अप्रैल 1925 को कर्नाटक के शेडबाल में श्री कल्लप्पा उपाध्ये और श्रीमती सरस्वती उपाध्ये के घर जन्मे बालक सुरेन्द्र ने मात्र 21 वर्ष की उम्र में 15 अप्रैल 1946 को जैनेश्वरी दीक्षा धारण करके क्षुल्लक बने और फिर 25 जुलाई 1963 को दिल्ली में आचार्य श्री देशभूषणजी महाराज ने आपको मुनि दीक्षा दी। दीक्षा के बाद आपने दक्षिण भारत से लेकर उत्तर भारत सम्पूर्ण भारतवर्ष में अहिंसा का परचम लहराया।

इस वर्ष आपका जन्म शताब्दी वर्ष मनाया जा रहा है जिसका विधिवत शुभारंभ माननीय प्रधानमंत्री जी के करकमलों से नई दिल्ली के विज्ञान भवन में उनके आचार्य पदारोहण दिवस 28 जून को राष्ट्रसंत परम्पराचार्य श्री प्रज्ञसागर जी महाराज के सानिध्य में सम्पन्न होगा।

उक्त जानकारी देते हुए वर्धमानपुर शोध संस्थान के ओम पाटोदी ने बताया कि आचार्य श्री विद्यानंद जी जन्म शताब्दी समारोह के पावन अवसर पर भारत सरकार द्वारा एक 100 रूपये मूल्य वर्ग का स्मारक सिक्का एवं 5 रूपए मूल्य वर्ग का विशेष डाक टिकट जारी किया जाएगा जिसका विमोचन स्वयं प्रधानमंत्री मोदी जी करेंगे।

पाटोदी ने बताया कि इंदौर शहर से आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज का गहरा संबंध रहा है। शहर का प्रसिद्ध तीर्थ गोम्मटगिरि आचार्य श्री विद्यानंद की प्रेरणा से स्थापित किया गया था। जिसका पंचकल्याणक वर्ष 1986 में आचार्यश्री विद्यानंदीजी एवं आचार्य श्री विमलसागरजी और कई संतों की उपस्थिति में हुआ था। वहीं आचार्य श्री को सिद्धान्त चक्रवर्ती उपाधि से अलंकृत भी 6 नवम्बर 1979 को इन्दौर की धरा पर चतुर्विध संघ द्वारा किया गया था।

भारत सरकार द्वारा एक 100 रूपये मूल्य वर्ग का स्मारक सिक्का एवं 5 रूपए मूल्य वर्ग का विशेष डाक टिकट जारी किया जाएगा जिसका विमोचन स्वयं प्रधानमंत्री मोदी जी करेंगे

पाटोदी ने बताया कि अब तक दिगम्बर जैन संतों को लेकर भारतीय डाक विभाग द्वारा मात्र तीन डाक टिकट जारी किए गए हैं, जिसमें आचार्य श्री ज्ञानसागर जी, आचार्य श्री विमल सागर जी एवं हाल ही में आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज पर 5 रूपए मूल्य वर्ग के डाक टिकट जारी किए गए हैं। वहीं संत शिरोमणि युगाचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज पर डाक टिकट जारी होना प्रतीक्षित है। डाक टिकट और सिक्का जारी करने की घोषणा पर समाज जन द्वारा हर्ष व्यक्त किया जा रहा है।

WONDERFUL 12 Nights / 13 Days
EUROPE
शुद्ध जैन भोजन किचन कारावैन के साथ
7 खुबसूरत देशो की सैर
10 Sep, 23 Sep, 25 Oct, 14 Nov
यूरोप जैन मंदिर के दर्शन
FRANCE, PARIS, ITALY
AUSTRIA, AMSTERDAM
GERMANY, SWITZERLAND

ला: नेमचंद जुगल किशोर जैन तीर्थ यात्रा संघ
VAYUDOOT WORLD TRAVELS PVT. LTD.
Mob : +91 9313338256, 9810408256, 9818312056

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

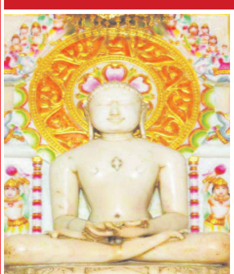

869 साल प्राचीन मूलनायक
श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

शांतिधारा का प्रसारण
LIVE
आरती : 7:15 - 7:45 AM
शांतिधारा : 8:30 AM
@jainmandirhasteda
नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9783016885
नामांकित शांतिधारा के लिए किसी भी राशि का आग्रह नहीं है।

हस्तेड़ा जैन मंदिर दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.
संपर्क सूत्र:
नितिन कुमार पाटनी (मंत्री) 9001255955
मनीष जी गंगवाल (कोषाध्यक्ष) 095880-20330

JK MASALE SINCE 1997
Buy online on jkcart.com

– Breakfast Matlab –
JK POHA
Shudh Khao Swasth Raho...

भव्य पंचकल्याणक में तीर्थंकर शांतिनाथ की निकाली शोभायात्रा

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर शहर की इंजीनियरिंग कॉलोनी मानसरोवर में आचार्य शशांक सागर जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य चल रहे पंचकल्याणक महामहोत्सव में रविवार 14 जून 2025 को महोत्सव में जन्म और तप कल्याणक की क्रियाएं संपन्न हुई। मानसरोवर के न्यू सांगानेर रोड स्थित मान्यावास के इंजीनियर्स कॉलोनी के राधा रानी गार्डन में चल रहे तीन दिवसीय पंचकल्याणक महोत्सव के दूसरे दिन रविवार को प्रातः 6.30 बजे आचार्य शशांक सागर महाराज ससंघ सान्निध्य और बाल ब्रह्मचारी पंडित धर्मचंद शास्त्री और ब्रह्मचारी जिनेश भैया के दिशा निर्देश में जन्म कल्याणक की क्रियाएं बीज मंत्रों के साथ प्रारंभ हुई जिसमें सर्वप्रथम मारुदेवी (तारादेवी छाबड़ा) द्वारा भगवान जन्म हुआ, जिसके बाद भगवान को नगर भ्रमण कराते हुए जयकारों की दिव्य गूंज से आसमान गुंजायमान हो उठा और सौधर्म इंद्र एवं दिवाकर शिल्पी जैन चित्तौड़ा तीर्थंकर बालक को अपने मस्तक पर बिठा बैंडबाजों और जयकारों के साथ नाचते गाते हुए तीर्थंकर बालक को लेकर पांडुकशिला की ओर चलने लगे और नगर में दिव्य गूंज की लहर दौड़ पड़ी और सभी श्रावक और श्राविकाएं सौधर्म के साथ नगर यात्रा में साथ चलने लगे और देखते ही देखते सारे इंद्र पुष्प वर्षा करते हुए चलने लगे, धनपति कुबेर इंद्र अशोक सीमा जैन द्वारा पूरे नगर में रत्नवृष्टि की गई। पांडुकशिला पर तीर्थंकर बालक को विराजमान किया गया और बीज मंत्रों और अष्ट द्रव्यों के साथ जन्म स्थापना कर जल, चन्दन, केसर, गुलाब, नारियल, अनार, संतरा, दूध, दही, घी इत्यादि 21 रसों से सभी प्रमुख इंद्र इंद्राणियों द्वारा कलशाभिषेक किया गया। इस अवसर पर लगभग 251 से अधिक श्रद्धालुओं ने जन्माभिषेक कलश में भाग लिया, महोत्सव समिति प्रचार संयोजक अभिषेक जैन बिट्टू एवं महोत्सव संयोजक सपन छाबड़ा तथा मनीष छाबड़ा ने बताया कि जन्म और तप के अवसर पर पंडित धर्मचंद शास्त्री व ब्रह्मचारी जिनेश भैया के निर्देशन में दिन भर अष्ट द्रव्यों से पूजन का भी दौर लगातार चलता रहा और जन्म, तप कल्याणक की आंतरिक क्रियाएं पूरी रात भर चलती रही। इस दौरान रविवार को 1008 अर्घ्य और नारियल चढ़ाए गए। इससे पूर्व आचार्य शशांक सागर महाराज ने पाषाण की मूर्तियों को सूर्य मंत्र देखकर भगवान बनने की प्रक्रिया को संपन्न कराया।

मुनि वैराग्य सागरजी एवं सुप्रभ सागरजी को चातुर्मास हेतु श्रीफल भेंट

पारस जैन "पार्श्वमणि" कोटा

कोटा (राजस्थान)। आर के पुरम स्थित शनि अनिष्ट निवारक मुनिसुव्रतनाथ दिगंबर जैन त्रिकाल चौबीसी मंदिर में परम पूज्य मुनि वैराग्य सागर जी महाराज एवं सुप्रभसागर जी महाराज को विभिन्न जगह से आए श्रद्धालुओं ने चातुर्मास हेतु श्रीफल भेंट किया। मंदिर समिति के अध्यक्ष अंकित जैन, महामंत्री अनुज जैन, कोषाध्यक्ष ज्ञानचंद जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि द्वय मुनि श्री का मंगल प्रवास अभी आर के पुरम मंदिर जी में चल रहा है। द्वय मुनि श्री के पावन चरणों में आर के पुरम मंदिर समिति के पदाधिकारियों सहित समाज के लोगों ने चातुर्मास के लिए श्रीफल भेंट किया।
इस अवसर पर सकल जैन समाज के अध्यक्ष प्रकाश बज, महामंत्री पदम बडला, विमल जैन, जे. के. जैन, मनोज जयसवाल, राजेश खटोड़, पंकज जैन, पदम जैन, लोकेश बरमूडा, सागर चंद जैन मौजूद थे। राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी एवं मंदिर समिति के प्रचार प्रसार मंत्री पारस जैन "पार्श्वमणि" ने बताया कि जवाहरनगर, लाडपुरा, रामपुरा उपनगरों में मंगल चातुर्मास हेतु श्रीफल भेंट किया गया। देवपुरा बूंदी से भी जैन समाज के श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव पूर्वक चातुर्मास हेतु श्रीफल भेंट किया। मंदिर समिति कार्याध्यक्ष प्रकाश जैन ने बताया कि प्रातःकाल द्वय मुनिश्री के सानिध्य में विश्व शांति की मंगल कामना से महा शांतिधारा की गई। मुनिश्री वैराग्य सागर जी ने धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि वर्तमान समय में लोग बच्चों में सद्संस्कारों का बीजारोपण नहीं करते हैं, बच्चों को उच्च शिक्षा प्रदान करवाते परंतु धार्मिक शिक्षा पर ध्यान नहीं देते हैं यह सबसे बड़ी विडंबना इस समय की है। बचपन में जो धार्मिक सद-संस्कार दिए जाते हैं वो पचपन की दहलीज तक ज्यों के त्यों बने रहते हैं इसलिए बचपन में सद्संस्कारों का बीजारोपण अति आवश्यक है। महापुरुषों के जीवन चरित्र अवश्य अपने बच्चों को पढ़ने की प्रेरणा देवें जिससे वो युवा होने पर अपने लक्ष्य से नहीं भटके। आगे मुनि श्री सुप्रभ सागर महाराज जी ने धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति में चित्र की नहीं चरित्र की पूजा होती है साधनों की नहीं साधना की आराधना की जाती है। साधु संगत बड़े पुण्य से मिलती है। जिस नगर शहर के श्रद्धालुओं का महान पुण्य होता है वहीं संतों का चातुर्मास हो पाता है। संत के सानिध्य से भले व्यक्ति संत न बन पाए परंतु संतोषी तो बन ही जाता है।

नमिनाथ भगवान का मनाया जन्म-तप कल्याणक

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

फागी कस्बे सहित परिक्षेत्र के चकवाडा, चोरू, नारेड़ा, मंडावरी, मेहंदवास, निमेड़ा, लसाडिया तथा लदाना सहित कस्बे के जिनालयों में जैन धर्म के इक्कीसवें तीर्थंकर भगवान नमिनाथ का जन्म व तप कल्याणक महोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक मनाया।
कस्बे के चकवाड़ा रोड पर स्थित त्रिमूर्ति जिनालय में प्रातः श्री जी का अभिषेक करने के बाद समाज की ओर से सामूहिक शांतिधारा कर अष्ट द्रव्यों से पूजा अर्चना कर विभिन्न तीर्थंकरों के अर्घ्य अर्पित किए। कार्यक्रम में आचार्य वर्धमान सागर महाराज, आचार्य इन्द्रनंदी जी महाराज, आर्यिका श्रुतमति माताजी, सुबोध मति माताजी एवं जिनवाणी माता के अर्घ्य अर्पित करने के बाद जैन धर्म के इक्कीसवें तीर्थंकर नमिनाथ भगवान का जन्म-तप कल्याणक महोत्सव का अर्घ्य चढ़ाकर विश्व में सुख, समृद्धि और खुशहाली की कामना की गई, कार्यक्रम में महिला मंडल की मुन्ना कासलीवाल एवं शिमला नला ने बताया कि नमिनाथ भगवान के पिता का नाम विजय और माता का नाम सुभद्रा था। इनका जन्म मिथिला में हुआ था। इनका प्रतीक चिन्ह नीलकमल है। समाज की निर्मला बजाज एवं पारसी कागला ने बताया कि नेमिनाथ भगवान ने लोगों को सम्यकज्ञान प्राप्त करने और आत्मा की शुद्धि पर ध्यान करने के लिए प्रोत्साहित किया, उन्होंने दुखों से मुक्ति पाने के लिए अहिंसा, आत्म नियंत्रण और कर्मों के नाश पर जोर दिया। कार्यक्रम में समाजसेवी रामस्वरूप जैन मंडावरा, राम स्वरूप मोदी, भागचंद कासलीवाल, सुरेंद्र पंसारी, पदम बजाज, सुरेश मंडावरा, कमलेश मंडावरा, मुकेश नला, एडवोकेट विकास नला, पवन मोदी तथा राजाबाबू गोधा एवं महिला मंडल की विमला मोदी, मुन्ना कासलीवाल, शिमला नला, सुनिता पंसारी, पारसी कागला, निर्मला बजाज, मंजू मड़ावरा, मैना कलवाड़ा, संजू नला, प्रीति कठमाणा, त्रिशला नला सहित सभी श्रावक श्राविकाएं मोजूद थे।

भक्तामर स्तोत्र का मंडल विधान अपार धर्म प्रभावना से संपन्न हुआ

महावीर कुमार जैन सरावगी

नैनवां। 15 जून रविवार को प्रातः 8:00 बजे सरावगी समाज के तेरापंथ जैन मंदिर में 1008 आदिनाथ भगवान की शांतिधारा करने का परम सौभाग्य कैलाश चंद विवेक बजाज परिवार, णमोकार मंत्र का मंगल कलश बुद्धि प्रकाश हेमंत कुमार जैन मोडीका का परिवार को प्राप्त हुआ। प्रतिष्ठाचार्य महेंद्र कुमार जैन शास्त्री द्वारा भक्तामर स्तोत्र के 2 वर्षों से नियमित 48 दीपकों से सायंकाल पाठ संपन्न हो रहे थे उनको 48 श्रीफल चढ़ाकर विधिविधान से संपन्न कराया। महिलाओं द्वारा बीच-बीच में जैन भजनों की प्रस्तुति नृत्य पर की गई। इस विधान में पूजन सामग्री विधान संगीत में यंत्रों द्वारा किया गया। पुण्यार्जक सूरजमल जैन एडवोकेट, संगीतमय विधान का पुण्यार्जक मोहनलाल कमल कुमार जैन मारवाड़ा द्वारा किया गया। समिति द्वारा 2 वर्षों तक सहयोग करने वालों का सम्मान में राजेश संगीता जैन देईवाला, राजेंद्र श्रीमती इंद्रा ठोलिया, राहुल जैन कटारिया, प्रतिष्ठाचार्य महेंद्र जी शास्त्री समिति द्वारा प्रदीप बजाज, कैलाश बजाज, महावीर सरावगी, बनी सरावगी, दिनेश गोधा, राजकुमार कटारिया, गुणमाला सरावगी, कमला गुढावाला आदि ने तिलक, माला, दुपट्टा पहना कर स्वागत सम्मान किया। नैनवां नगर का यह पहला जिनालय है जिसमें निर्मित दो वर्षों से 1008 भगवान सांवलिया पारसनाथ की भक्तामर स्तोत्र के प्रतिदिन 2 वर्षों तक श्रद्धापूर्वक 48 दीपकों का विधान आज संपन्न हुआ।

आचार्य सुंदर सागर जी महाराज ने मंगल आशीर्वाद पारस जैन "पार्श्वमणि" पत्रकार को दिया

विमल कमलेश जैन (दरा वाले) कोटा

कोटा (राजस्थान)। राणा प्रताप मीरा हाड़ी रानी के तप त्याग और साधना की पावन वसुंधरा शिक्षण के लिए संपूर्ण भारतवर्ष में सुविख्यात धर्म प्राण औद्योगिक नगरी कोटा के तलवंडी स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर में परम पूज्य तपो मूर्ति राष्ट्र संत आचार्य 108 सुंदर सागर जी महाराज (14 पिच्छिका) ससंघ ने विगत् 35 सालों से पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले जैन युवा पत्रकार गौरव, सर्वश्रेष्ठ संवाददाता अवार्ड विजेता, वर्तमान समय में राजस्थान सरकार के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा वर्तमान के श्रवण कुमार की उपाधि से अलंकृत, अपनी सुरीली आवाज में भावपूर्ण भजनों की प्रस्तुति देने वाले, राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी पारस जैन ''पार्श्वमणि'' पत्रकार को प्रसन्न चित्र मुद्रा धर्म प्रभावना के लिए मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर बूंदी का गोठड़ा दिगंबर जैन समाज के पदाधिकारी एवं युवा मंडल के सदस्य भी उपस्थित थे।

पिता की स्मृति पर पुत्रों ने पक्षी आवास गृह का लोकार्पण एवं वृक्षारोपण किया

कुचामनसिटी। शहर के निकटवर्ती ग्राम मुआना में नवनिर्मित पक्षी आवास गृह का लोकार्पण व पौधारोपण शिखर चंद पाटनी की स्मृति के अवसर पर उनके पुत्र विमल पाटनी एवं महेंद्र पाटनी ने अपनी माता चौथी देवी के कर कमलों से करवाया।
कार्यक्रम में भंवरलाल बाबेल मारोठ, दातार सिंह, कुचामन से गुलाब चंद शर्मा, अनिल कुमार माथुर, भवानी सिंह राठौड़ ने अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन मोहन लाल सोनी ने किया। कार्यक्रम में भंवर सिंह चौहान पाटोदी परिवार ने विशेष सहयोग किया। इस मौके पर ग्रामीणों ने पाटौदी परिवार को साफा पहनाकर व माल्यार्पण कर उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम में भंवरलाल रामलाल, टोडाराम, बाज्या, इंद्रसिंह, घीसा राम पांचवा, प्रहलाद सिंह सुरेरा, याकूब भाटी, संपत लाल सहित ग्रामीणों ने पौधारोपण किया।

- शेखर चन्द पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

जैन गजट की सदस्यता, विज्ञापन या सहयोग राशि 'जैन गजट' के पक्ष में पंजाब नेशनल बैंक, राजेन्द्र नगर शाखा, लखनऊ- 226004 उ.प्र. में सेविंग खाता संख्या 2405000100102500 (RTGS/NEFT IFSC CODE - PUNB 0185600) में आनलाइन/चैक द्वारा जमा कराकर डिपोजिट स्लिप सहित अपने पूर्ण नाम-पते, पिन कोड सहित निम्न पते/वाट्सअप/ईमेल पर भेजकर सूचित करने की कृपा करें-

जैन गजट कार्यालय- श्री नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004
मोबा./वाट्सअप- 7607921391, मोबा. 7505102419
Email: jaingazette2@gmail.com

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

SANTOSH JAIN & ASSOCIATES
SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD
ANAMICA TRADERS PVT. LTD.
L. N. FINANCE PVT. LTD.

OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
Near Athgaon Flyover, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला

श्रीमती सरिता काला

संदीप-स्वाति पाटनी

श्रेयांस-स्नेहा काला

RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com

SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

णमोकार तीर्थ भक्तों ने विश्व के सबसे बड़े 151 फुट के पत्र के माध्यम से गुरुदेव से विनती की

उमराने संवाददाता। कुंथुगिरी में 15 जून को गणधराचार्य कुंथुसागर जी महाराज के 79वें जन्म दिवस के अवसर पर भक्तों ने विश्व के सबसे बड़े 151 फुट के पत्र के माध्यम से गुरुदेव से विनती की।

राष्ट्रीय संत परम पूज्य आचार्य श्री देवनंदीजी गुरुदेव की प्रेरणा से नासिक जिले के चांदवड़ तालुका के मालसाने गांव के पास णमोकार तीर्थ नामक भव्य तीर्थ स्थल का निर्माण किया गया है। इस तीर्थ स्थल पर विश्व का सबसे बड़ा समवशरण, सबसे बड़ी पंचपरमेष्ठी प्रतिमाएं, णमोकार संग्रहालय, गुरु भवन आदि बनाए गए हैं। इस तीर्थ स्थल का अंतर्राष्ट्रीय प्राण प्रतिष्ठा समारोह 6 से 13 फरवरी 2026 तक आयोजित किया जाएगा। पूज्य आचार्यश्री कुंथुसागरजी गुरुदेव देवनंदीजी गुरुदेव के महान गुरु हैं। उन्होंने उनसे दीक्षा ली है। वे दिगंबर संप्रदाय के सबसे पुराने और महान संत भी हैं। वे कुथुगिरी में विराजमान हैं। सभी ट्रस्टी और भक्त परिवार चाहते हैं कि गुरुदेव इस कार्यक्रम में उपस्थित रहें।

उसी के तहत दुनिया का सबसे बड़ा यह पत्र बनाया गया, इस पत्र में गुरुदेव से इस कार्यक्रम में उपस्थित होने का अनुरोध किया गया। णमोकार तीर्थ क्या है, इसकी तैयारी कैसे की गई, क्या-क्या सुविधाएं हैं, प्राण प्रतिष्ठा समारोह में क्या-क्या होगा, उनके आने से क्या लाभ होगा आदि कई बातें इसमें लिखी हैं। साथ ही अंत में पूज्य आचार्य देवनंदीजी गुरुदेव का हस्तलिखित पत्र भी शामिल किया गया।

यह पत्र नासिक में तैयार किया गया। इसकी लंबाई 151 फीट और चौड़ाई 3 फीट है। यह दुनिया का सबसे लंबा पत्र है। इसके लिए फ्लेक्स मटेरियल का इस्तेमाल किया गया है। सभी नोट्स लिखने में मात्र 2 दिन लगे। इसके लिए नासिक स्थित मीडिया समन्वयक पारस लोहाड़े की टीम ने वैश्विक अभियान तैयार किया है।

यह पत्र कल कुन्थुगिरी में आचार्य कुंथुसागरजी के चरणों में अर्पित किया गया। इसके लिए नीलम अजमेरा, संतोष जैन पेंढारी, महावीर गंगवाल, अनिल जामगे, संतोष काला, बाबूभाई गांधी, ललित पाटनी, संजय कासलीवाल, विनोद लोहाड़े, जितेन्द्र शाह, प्रकाश सेठी, मिहिर गांधी, ओम पाटनी, पारस लोहाड़े, अजीत जैन, भरत ठोले सहित अनेक पदाधिकारीगण तथा सोलापुर,

अकलुज, फलटण, नासिक, उस्मानाबाद, औरंगाबाद, नांदेड़ सहित अनेक शहरों से अनेक भक्तगण बड़ी संख्या में उपस्थित थे। इस पत्र के माध्यम से सभी भक्तों का अपार उत्साह दिखाई दिया तथा गुरुदेव ने णमोकार तीर्थ के कार्यक्रम में भाग लेने के लिए सहमति व्यक्त की। ट्रस्ट के अध्यक्ष निलम अजमेरा ने कहा कि हम चाहते हैं कि गुरुदेव अवश्य पधारें, इसके लिए उनसे इसमें अनुरोध किया गया है। कार्यक्रम बहुत बड़ा है, उनकी उपस्थिति कार्यक्रम की भव्यता को बढ़ाएगी इसलिए हमने इतना बड़ा पत्र तैयार करने का निर्णय लिया तथा गुरुदेव सभी भक्तों की बातें सुनने के लिए सहमत हुए। यह जानकारी प्रसार संयोजक विनोद पाटणी ने दी।

अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर जी का मंगल प्रवेश

स्वराज जैन, दिल्ली

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज का गत दिनों ससंघ दिल्ली के लाल मंदिर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ जिसमें जैन समाज दिल्ली के अध्यक्ष श्री चक्रेश जैन एवं श्री पुनीत जैन व श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के वरिष्ठ पदाधिकारी मौजूद रहे। गुरुदेव आचार्यश्री ने कहा कि नए तीर्थों के साथ साथ प्राचीन तीर्थों की सुरक्षा और जीर्णोद्धार जरूरी है। मुनि सहज सागर जी ने कहा कि प्राणियों में केवल मानव ही संयम धारण कर सकता है और जीवन की सुरक्षा के लिए संयम जरूरी है। संघ में 16 पिच्छी हैं। आचार्य श्री ने आहार के बाद सामायिक गुरुपूजा स्वाध्याय प्रतिक्रमण गुरुभक्ति भी कराई। आचार्य श्री लाल मन्दिर चांदनी चौक दिल्ली से निर्माण विहार के लिए विहार कर गये।

आचार्य सुशील कुमार महाराज के पर्यावरण जन्म शताब्दी वर्ष का भव्य शुभारंभ

स्वराज जैन, दिल्ली

अंबेडकर इंटरनेशनल सेन्टर नई दिल्ली में आयोजित इस ऐतिहासिक समारोह में भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह कार्यवाहक दत्तात्रेय हौसला वाले, अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद अध्यक्ष श्री आलोक कुमार जी, स्वामी चिदानन्द सरस्वती, वरिष्ठ चिंतक कृष्णा सहा विद्यार्थी, कमल ऑसबाल, कुलदीप जैन, श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जैन गंगवाल उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत विमान हादसे में दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए एक मिनट के मौन से हुई। इसके बाद सभी लोगों को पर्यावरण संरक्षण की शपथ दिलाई गई। रामनाथ कोविंद और दत्तात्रेय हौसला वाले ने गुरुदेव के चरणों में कल्पवृक्ष को जल अर्पित कर महोत्सव का औपचारिक उद्घाटन किया।

राजकीय अतिथि, कवि, हृदय, वात्सल्य मूर्ति, अभीक्ष्ण ज्ञानपयोगी, आचार्य 108 श्री शशांक सागर जी मुनिराज अतिशय क्षेत्र पदमपुरा में विराजमान हैं

शशांक वाणी

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थों की पावन रजकण, बड़े भाग्य से मिल पाता
उन चरणों का स्पर्शन जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन,
ऐसे आचार्य शशांक सागर जी के चरणों में हमारा शत शत नमन

–लक्ष्य ऊँचा हो तो ही जीवन में ऊंचे काम होते हैं
–दूसरे की उतारने से अपनी अपने आप उतर जाती है

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

1. श्रेष्ठी ऋषभ कुमार सेठी (अध्यक्ष तिलक नगर, जयपुर)
2. पवन कुमार बड़जात्या मरवावाले किशनगढ़
3. श्रेष्ठी विनित चांदवाड़ (सिद्धार्थ नगर, जयपर)
4. श्रेष्ठी अनूप चंद जैन (भुसावर वाले, जयपुर)
5. श्रेष्ठी महेश-राकेश कुमार ठोलिया (मारूजी का चैक, जयपुर)

1. अरूण कुमार काला अध्यक्ष (कीर्ति नगर जयपुर)
2. अशोक चांदवाड, (वसुन्धरा कॉलोनी, जयपुर)
3.भंवरी देवी काला ध.प. महेन्द्र काला, (स्वर्णपथ मानसरोवर जयपुर)
4. श्रीमती राखी गंगवाल, (आदिनाथ नगर, जयपुर)

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

वर्तमान सामाजिक स्थिति एवं युवा वर्ग - एक चिन्तन

संपादकीय

आजकल समाज में अधिकांश लोग युवकों का दोषारोपण करते रहते हैं कि आजकल के युवकों में धार्मिकता नहीं है, संस्कार नहीं हैं। उनका खान-पान अशुद्ध है।

युवक धार्मिक वृति का हो, उनमें संस्कार, आचार विचार, आहार-विहार और व्यवहार शुद्ध हो, धर्ममय हो, यह शुभ आकांक्षा है। पर इस चाहना के साथ गंभीरता और उस दिशा में प्रवृत्त होने की तैयारी लेशमात्र भी नहीं है। हर घर में प्रातःकालीन शैया चाय अनिवार्यता बन गयी है। देव दर्शन से अवकाश का यह भी कारण है। रात्रि भोजन का प्रारम्भ कुछ दशक पूर्व का है, जो अब सामान्य होता जा रहा है। दहेज के लिए सौदे, प्रदर्शन आदि सब हम कर रहे हैं, अधेड़ आयु वर्ग के लोग कर रहे हैं। नयी पीढ़ी इसे देख रही है, सीख रही है। आज अधिकांश उच्च वर्गीय घर क्लब बनते जा रहे हैं जहां खुली जुआं, राग-रंग और मादक द्रव्यों का सेवन होता है। समाज में इन्हीं लोगों का वर्चस्व है, सम्मान है। व्यवसाय, धार्मिकता और शिक्षण संस्थाओं पर इनका ही आधिपत्य है। धार्मिक आयोजनों में भी ये ही प्रमुख हैं। मध्यम वर्ग की स्थिति इतनी भयावह है कि वह अपनी सन्तति से ही आतंकित हुई रहती है। वह आज की बढ़ती हुई आवश्यकताओं के अनुरूप व्यवस्था नहीं कर पाती और घर से ही पलायन किये रहती है। निम्न आय वर्ग तो इन प्रश्नों को उठाता ही नहीं है। उसमें तो साहस ही नहीं रह गया हैं।

आज समूचा समाज ही दिग्भ्रमित है। निजाधार खोकर निराधार होता जा रहा है। जैनत्व ही नहीं जैनत्व से भी हटते जा रहे हैं। पहिचान सूत्र पुरानी परम्परा और रूढ़िया होकर ध्वस्त हैं। अब अपनी दुर्बलता और पाप को ढांपने के लिये नयी पीढ़ी को आरोपित किये रहते हैं। दोषी करार दिये रहते हैं।

आज मंदिरों की दुर्दशा है कि उसके लिए जिम्मेदार कौन है ? अष्टान्हिका पर्व और अन्य धार्मिक आयोजनों की श्रृंखला किसने समाप्त की है। शिक्षण संस्थाओं से धार्मिक शिक्षण क्यों उठा दिया गया है ? आज तो ऐसा कोई मंच भी नहीं है जहां धर्म तत्व की चर्चा उठायी जा सके और अपनी जिज्ञासा का समाधान पाया जा सके।

धार्मिक, सामाजिक और शिक्षण संस्थाओं पर जिस तरह लोग आधिपत्य किए हुए हैं, वह ऐसी पकड़ है जो सांप की केंचुली की तरह है। संस्थाओं के विधान, नियम और तरीके ऐसे बनाये हुए हैं कि नया खून प्रवेश करना भी चाहे तो उनकी चाहना के बिना कर नहीं सकता है। स्वयं नकारे होकर समाज को भी वैसा ही बनाये हुए हैं। तीस-तीस वर्षो से जुड़े हुए लोग भी पदों से मुक्त होकर संरक्षण देने दिशा बोधक बनने का तैयार नहीं हैं। एक दो तीन संस्थाओं में ही नहीं कई संस्थाओं में अपनी टांग अड़ाये रहते हैं। फिर भी प्रश्न उठाते हैं और युवकों को कोसते हैं। उन्हें शिकायत है कि युवक धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं के कार्यों में रुचि नहीं लेते हैं। शायद उनकी बातों का मर्म यही है कि वे इनके कार्यकर्ता होकर नहीं रहते, इन्हें मालाएं नहीं पहनाते।

सही तो यह है कि आज सामाजिक संस्थाएं निहित स्वार्थों का केन्द्र हो गयी हैं। नेतृत्व व्याधिग्रस्त हैं। इन सबके विरुद्ध कौन आवाज उठावे ? अवश्य ही युवकों को विद्रोह के लिये होना चाहिए। लेकिन युवक और आज समाज से जुड़ा हुआ ही नहीं है। कोई भी शक्ति अपना काम उसी समय करती है जब प्रेरणा होती है। युवकों के समक्ष कोई प्रेरणा नहीं है और प्रेरक शक्ति भी नहीं है। समाज में कथित नेतृत्व उन हाथों में है जिनका चिन्तन सम्यक नहीं है, जिनका आचार-विचार और व्यवहार भी सम्यक नहीं है। युवक प्रभावित इनसे हो नहीं सकता।

धर्माचार्य, बुद्धिजीवी व चिन्तक भी आज सम्पतिशाली के प्रति सदाशयी है। यही कारण है कि आज संस्थाएं हैं उनके नाम पट्ट हैं और नेता ही नेता हैं। कार्यकर्ता कोई नहीं है और जो हैं वे मुनीम गुमाश्ते जैसे सेकर हैं।

भगवान महावीर के सिद्धान्तों के अनुसरण की चर्चा भी इन व्याधि ग्रस्त नेता या पंडितों से सुनता है तो मन ही मन हंसता है। वह इस प्रकार की दुमुंही बातों से दूर ही रहना चाहता है। इसलिए प्रश्न मात्र प्रश्न है। उत्तर है जिसे देखने और समझने की हमारी तैयारी नहीं है। समाज वही चैतन्य और समृद्ध होता है जो आने वाली पीढ़ी के लिए सीढ़ी बनाये रहता है। नयी पीढ़ी के विद्रोह को उभारता भी है और दिशाबोध भी देता है। वह दिन मंगलमय होगा जब यह मान्यता स्वीकार होगी कि नयी पीढ़ी अपनी धारा में होती है, विकासमान होती है। अपने जमाने के अनुकूल होती है। गया कल आज को चिन्हित करे यह विस्मयकारी जिस समाज में ऐसा होता है वह जड़ हुआ रहता है अतीत होकर व्यतीत हो जाता है। जैन समाज जागृत समाज रहा है। यह जागरण तभी है जब अहम् का विसर्जन है। युवकों के जोश और बुजुर्गों के होश का समन्वय होना मंगलाचरण है। समाज को वर्तमान के लिए होकर जीवंत होना है, जयवन्त होना है।

-कपूरचन्द जैन पाटनी
प्रधान सम्पादक

वो जमाना और था

डॉ. संतोष जैन
काला (CA)
गुवाहाटी
मो. 9435048488

1. पडोस और अपनापन -

➡ जब पड़ोसियों के आधे बर्तन हमारे घर और हमारे बर्तन उनके घर में होते थे, और कभी-कभी तो यह तय करना मुश्किल हो जाता था कि कौन सा बर्तन किसका है।

➡ जब पड़ोस की बेटी पीहर आती थी, तो पूरे मोहल्ले में उत्सव जैसा माहौल बन जाता था, महिलाएं उसे देखने और मिलने आतीं, बच्चे मिठाई खाने के बहाने घर में मंडराते रहते थे।

➡ जब मोहल्ले में टीवी सिर्फ दो-चार घरों में ही होता था और रामायण- महाभारत देखने के लिए पूरा मोहल्ला वहीं जुट जाता था।

➡ घर के किसी सदस्य की मौत होने पर घर की औरतों के अलावा गांव की औरतें भी दहाड़े मारकर रोती थीं।

➡ जब बिना घंटी बजाए, बिना अनुमति लिए किसी के भी घर में घुस जाना आम बात थी और मेजबान हमेशा मुस्कुराकर स्वागत करते थे।

➡ जब पड़ोसी सिर्फ नाम के नहीं, बल्कि परिवार के सदस्य जैसे होते थे।

प्रायः सभी दो घरों के बीच एक दरवाजा होता था, जिससे हम अपने घर से निकलकर गाँव के अंतिम घर तक पहुँच जाया करते थे।

➡ अखबार किसी किसी के घर पर आता था, गांव वाले उनके घर जाकर अखबार पढ़ लेते थे।

2. रिश्तों की गर्माहट -

➡ जब रिश्तेदारों के आने से घर में त्योहार जैसी रौनक हो जाती थी और उनके लौटने के बाद घर सूना-सूना लगता था।

➡ जब भुआ और मामा जाते समय जबरन हमारे हाथों में पैसे पकड़ाते थे, और हम बच्चों की दुनिया उन चंद रुपयों से ही रोशन हो जाती थी।

➡ जब शादी के निमंत्रण के साथ पीले चावल और गन्ने के टुकड़े आया करते थे, और निमंत्रण सिर्फ औपचारिकता नहीं, बल्कि अपनापन जताने का तरीका होता था।

➡ जब किसी के घर कोई खुशी का मौका आता था, तो मोहल्ले की सभी महिलाएं बिना बुलाए काम में जुट जाती थीं।

➡ जब घर में मंगोड़ी, पापड़, खिचिया आदि बनाए जाते थे, तब पड़ोस की कुंवारी बेटियाँ और महिलाएँ हाथ बंटाने आ जाती थीं।

3. तीज-त्योहार और शादियां -

➡ पहले मां बाप ही अपने बच्चों के रिश्ते तय कर देते थे, वही रिश्ते मरते दम तक चलते थे, तलाक की कभी नौबत नहीं आती थी।

➡ दो दिनों तक बारातियों की आवभगत होती थी, डेरे में बारातियों को सारी सुख सुविधा के साथ ठहराया जाता था। जमीन पर दरी बिछाकर या बेंच लगाकर उन्हें अपने हाथों से खाना खिलाया जाता था।

➡ जब शादी में डीजे नहीं, ढोलक की थाप और महिलाओं के पारंपरिक गीत गूंजा करते थे। तीज के दिन सभी बेटियाँ एकजुट होकर खाने-पीने का सामान ले जाती थी और पिकनिक बनाती थी।

➡ जब बन्ना-बन्नी और सोहर गीतों के सुर मिलाने के लिए सुर में रहना जरूरी नहीं था, दिल से गाना ही काफी होता था।

➡ जब शादी एक-दो दिन का आयोजन नहीं, बल्कि हफ्तों तक चलने वाला उत्सव होता था, जिसमें हर दिन कुछ नया होता था। अजब बारात में नाचने के लिए किसी को शर्म नहीं आती थी और घर के बुजुर्ग भी घोड़ी के साथ-साथ नाचते थे।

➡ जब बच्चों के जन्मदिन पर केवल परिवार के लोग नहीं, पूरा मोहल्ला दावत में शामिल होता था और बधाइयों का शोर सुनाई देता था।

➡ जब शादीशुदा बेटी या बुआ पीहर आती थी, तो करीब एक घंटे तक घर में धमाल मचा रहता था।

4. बचपन की मासूमियत और खेल -

➡ जब हम बिना महंगे खिलौनों के भी सबसे खुश रहते थे - कभी कंचे, कभी गिल्ली-डंडा तो कभी एक साइकिल का पंचर सुधारना ही सबसे बड़ा एडवेंचर होता था।

➡ जब छत पर कटी पतंग लूटने के लिए बच्चों की पूरी सेना तैयार हो जाती थी।

➡ जब क्रिकेट के मैच में बैट वाले की बैटिंग हमेशा पक्की होती थी और अगर बॉल खो गई तो नया नियम वहीं तय कर लिया जाता था।

➡ जब घर के किसी बड़े की पुरानी घड़ी, टूटी हुई रेडियो या टार्च को खोलने और दोबारा

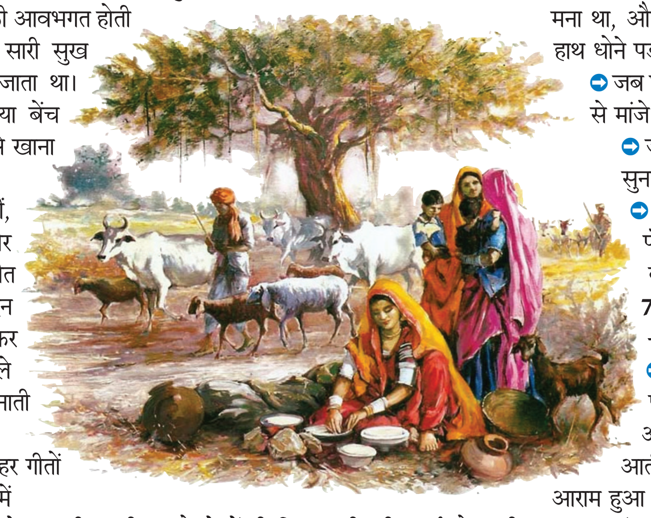

जोड़ने में ही विज्ञान की पूरी पढ़ाई हो जाती थी।

➡ जब हम दूसरों की साइकिल माँगकर साइकिल चलाना सीखते थे।

➡ जब हम दूसरों के घरों में लगे पेड़ों या बागान से आम, लीची, अमरूद चुराया करते थे।

➡ पर्सनल खर्च करने के लिए हर दिन 10 पैसे मिलते थे, बड़े बच्चों को 25 पैसे। 10 पैसे की आइस्क्रीम खाना अनिवार्य होता था।

5. स्कूल और अनुशासन -

➡ जब स्कूलों में शिक्षक हमारे गुण नहीं, बल्कि कमियां बताया करते थे, ताकि हम और बेहतर बन सकें।

➡ जब नए स्कूल के जूते शादी में पहनना भी गर्व की बात होती थी।

➡ जब स्कूल की छुट्टी का मतलब सिर्फ आराम नहीं, बल्कि गर्मियों में नानी के घर जाने की खुशी होती थी।

➡ जब शिक्षक की डांट प्यार का दूसरा रूप थी और माता-पिता की तरह उनका सम्मान किया जाता था।

➡ स्कूल जाते समय हम खट्टी चीजें, जैसे इमली, खट्टी कैरी और खट्टा चूर्ण लेकर जाते थे और सभी को चिढ़ाकर खाते थे।

6. परंपराएं और घर की रौनक -

➡ जब बिना हाथ धोए रसोई में घुसना सख्त मना था, और मटकी को छूने के लिए पहले हाथ धोने पड़ते थे।

➡ जब घर के सभी बर्तन राख और मिट्टी से मांजे जाते थे।

➡ जब दादी-नानी रात को कहानियां सुनाए बिना हमें सोने नहीं देती थीं।

➡ जब घर के आंगन में तुलसी के पौधे को जल देना रोज की पूजा का हिस्सा होता था।

7. साधारण चीजों में खुशियां -

➡ जब बिना एसी वाली रेल यात्रा पूरी होती थी, पूड़ी, आलू और अचार के साथ, और खिड़की से आती ताजी हवा ही सबसे बड़ा आराम हुआ करती थी।

➡ जब चंद खट्टे बेरों के लिए कंटीली झाड़ियों की चुभन सह ली जाती थी।

➡ जब कुल्फी वाले की घंटी सुनते ही बच्चे मीलों तक भागकर पहुंच जाते थे।

➡ जब गर्मियों में पेड़ों की छांव में बैठकर आम के टुकड़े और नमक मिर्च के साथ खाने का मजा ही कुछ और था।

➡ जब किसी के घर में आग लगती थी तब सारे गांव वाले मिलकर आग बुझाने में लग जाते थे।

8. घर-गृहस्थी और खान-पान -

➡ जब हर घर में एक तांबे या पीतल की थाली होती थी, जिससे खाने का स्वाद अलग ही लगता था।

➡ जब सिल-बट्टे पर पिसी हुई चटनी का स्वाद बाजार की मशीनों में बनी चटनी से कई गुना बेहतर होता था।

➡ जब रोटियों के साथ घर की बनी हरी मिर्च और गुड़ की डली मिलना आम बात थी।

➡ जब किसी घर में खीर या हलवा बनता था, तो खुशबू पूरे मोहल्ले में फैल जाती थी, और पड़ोसी बिना बुलाए ही चखने आ जाते थे।

➡ जब हम गन्ना, कमला, रसगुल्ला, काजू कतली आदि खाने की प्रतियोगिता किया करते थे।

9. जीवनशैली और सेहत -

➡ जब डॉक्टर को दिखाने हम नहीं जाते थे, बल्कि डॉक्टर खुद घर आते थे, और उनकी फीस में छूट भी मिल जाती थी अगर वे हमारे परिवार को अच्छे से जानते हों।

➡ जब सर्दी-जुकाम के लिए घर की बनी काढ़े की एक चम्मच ही सबसे बड़ी दवा होती थी।

➡ गांव के चौपाल या किसी घर के आगे ताश खेलने वाले का जमघट लगा रहता था। खेलने वाले 4 या 6 होते थे, किन्तु एडवाइस देने वाले उनसे तीन गुना अधिक होते थे जो बात बात पर लड़ने को तैयार रहते थे।

➡ प्रायः हर घर में दौ चार गायों को पाला जाता था, घर का शुद्ध दूध पीने को मिलता था।

➡ जब मुल्तानी मिट्टी से बालों को रेशमी बनाया जाता था और नारियल के तेल से सिर की मालिश सबसे बड़ी थेरेपी होती थी।

➡ जब बड़े भाई-बहनों के छोटे हुए कपड़े हमारे लिए किसी नए खजाने से कम नहीं लगते थे।

निष्कर्ष - ''वो जमाना और था'' - जब रिश्तों में सच्चा प्यार था, अपनापन था, सादगी में ही खुशी थी, और जिंदगी में हर छोटी चीज का आनंद लेने की कला थी।

आज की दुनिया भले ही तकनीक और सुविधाओं से भर गई हो, लेकिन वह सच्ची खुशियों और मासूमियत का दौर कहीं पीछे छूट गया। सचमुच, ''वो जमाना वाकई कुछ और था!''

शीघ्र आवश्यकता है

भगवान पार्श्वनाथ धाम काकोरी, लखनऊ के लिये आवश्यकता है पुजारी की जिसे कम्प्यूटर का ज्ञान हो। आवास की व्यवस्था मिलेगी। भोजन स्वयं को बनाना होगा। वेतन योग्यतानुसार, सम्पर्क- 9452017984, 7007783995

जयपुर की ओर विहार कर रहे

परम पूज्य वात्सल्य वारिधि, जिन धर्म प्रभावक, राष्ट्र गौरव आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज एवं समस्त मुनि संघ के चरणों में

शत् शत् नमन, शत् शत् वंदन

नमनकर्ता: राजेन्द्र कुमार जैन, भागचन्द्र जैन एवं समस्त छाबड़ा परिवार

'Manik Ratan Bldg', By lane Kamal Patrol Pump, H. B. Road, Machkhowa, Guwahati - 781009

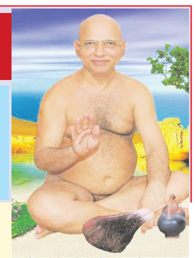

Jain Group

धन वरदान या अभिशाप

(डॉ.) चिरंजी लाल बगड़ा, कोलकाता

माँ स्वामिनी प्रेरणा, मुंबई से हिंदी- अंग्रेजी-गुजराती, त्रिभाषा में महंगे बहुरंगी आर्ट पेपर पर प्रकाशित, भारी भरकम मासिक पत्रिका, विगत् करीब एक वर्ष से प्रति माह मेरे पास आ रही है। पत्रिका का इस माह का अंक धन और संपतिः अभिशाप या वरदान जैसे सम-सामयिक विषय पर अनेक रोचक एवं प्रेरणास्पद आलेखों के साथ प्रकाशित है। इसमें एक प्रसिद्ध दानवीर युगल, श्री मनुभाई - रिका बेन शाह का, एक साक्षात्कार बहुत विस्तार से छपा है, जो बेहद रोचक एवं प्रेरणास्पद है।

एक गुजराती जैन युगल, श्री मनुभाई -रिका बेन शाह, सत्तर के दशक में अत्यंत संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में अमेरिका जाते हैं और अपने कठोर परिश्रम और कौशल के बल पर एम एस इंटरनेशनल नाम से एक विशाल व्यापार समूह खडा करते हैं, जिसका वर्तमान वार्षिक टर्न ओवर 25,000 करोड़ रुपये है और करीब 3,800 कर्मचारी कार्यरत हैं, जिन्हें वे अपने विशाल परिवार सदृश मानते हैं, विशेष बात यह है कि व्यापार में सफलता के बाद भी, उन्होंने अपना जीवन स्तर वही रखा, अपने खर्च सीमित रखे, लाभ को व्यापार में पुनर्निवेश करते गए, साथ ही परमार्थ हेतु स्वास्थ्य-शिक्षा-समाज उत्थान एवं मानव विकास के जनोपयोगी उपक्रम हेतु एक ट्रस्ट बनाकर उसमें प्रतिवर्ष अपनी दान राशि बढ़ाते चले गए। वर्तमान में करीब 850 से 900 करोड़ रुपये प्रति वर्ष, यानि दो से तीन करोड़ रुपये प्रतिदिन अपने ट्रस्ट के माध्यम से वे लोकोपकार के कार्यों में दान देकर श्रेष्ठ मानवोचित कर्तव्य का निर्वहन कर रहे हैं।

महात्मा गाँधी का मानना था कि धन समाज की धरोहर है, हम सिर्फइसके ट्रस्टी होते हैं। इसका सही उपयोग तभी है जब इसे जन कल्याण के कार्यों में लगाया जाए।

अरस्तू ने कहा था कि धन एक अच्छा सेवक है लेकिन स्वामी बुरा है। इसी क्रम में स्वामी विवेकानंद का कथन भी महत्वपूर्ण है कि धन को जकड़ कर रखने से यह दुर्गंधित हो जाता है, लेकिन जब इसे जन कल्याण हेतु प्रवाहित किया जाता है तो यह अमृत बन जाता है।

दान के इसी संदर्भ में एक और नाम स्मरण आता है श्री दीप चंद गार्डी का, जिनके साथ मुझे अनेक वर्षों तक अहिंसा रिसर्च फाउंडेशन नामक प्रसिद्ध सामाजिक संस्था के कार्य-संपादन के दौरान, व्यक्तिगत उनके साथ काम करने का दुर्लभ संयोग मिला। उन्होंने छात्र जीवन में चार आना प्रतिदिन दान के संकल्प से जीवन शुरू किया और अपने अंतिम समय में इस संकल्प को जन कल्याण के लोकोपकारी उपक्रमों हेतु प्रतिदिन एक करोड़ रुपये दान तक बढ़ाया। अपनी वसीयत के माध्यम से एक करोड़ रुपये प्रतिदिन दान की यह व्यवस्थित प्रक्रिया निरंतर सुचारु रूप से आज भी जारी है। श्री दीपचंद जी गार्डी सादा जीवन उच्च विचार के जीवंत प्रतिमान थे। जीवन के अंतिम तीस वर्षों तक वे अपनी वही पुरानी कार ही उपयोग में लाते रहे, विलासिता तो उन्हे छू भी नहीं पाई थी, ज्ञात रहे व्यक्तिगत धार्मिक दान इसमें शामिल नहीं है।

पत्रिका में टाटा का भी एक प्रेरक प्रसंग प्रकाशित है। प्रसिद्ध उद्योगपति श्री जमशेदजी नसरवानजी टाटा, जन्म 1839, स्थानांतरण के बाद 1887 तक बम्बई में किराये के घर में रहे तथा 1887 में बम्बई में उनका अपना क्लासिकल शैली में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्चिटेक्ट् द्वारा अति भव्य निवास स्थान बन कर तैयार हुआ।

संयोग से प्रसिद्ध आध्यात्मिक संत श्रीमद राजचंद्र जी का उनके घर आना हुआ, श्री जमशेदजी टाटा ने खुद उन्हें सर्वत्र घूम कर अपना बंगला दिखाया, जो अति विशिष्ट एवं महंगी आकर्षक सामग्रियों से भरा पड़ा था। इस घटना का ब्र. गोवर्धनदास कृत श्रीमद राजचंद्र जीवनकला पुस्तक में भी उल्लेख प्रकाशित है।

पूरा घर देखने के बाद श्रीमद मात्र इतना ही बोले - इसे कौन भोगेगा?

बस, यह शब्द जमशेदजी के हृदय में घर कर गए, ज्ञान चक्षु खुल गए, उन्होंने अपनी संपति का जन कल्याण के उपक्रमों हेतु ट्रस्ट बनाने का संकल्प ले लिया और नतीजा, पूरा विश्व देख रहा है कि टाटा ट्रस्ट द्वारा दस लाख करोड़ से अधिक के धन के सदुपयोग से, इस परिवार ने हमारे देश में लोक सेवा का उच्चतम मानदंड स्थापित किया है।

इसी संदर्भ में अब हम अपने दिगंबर जैन समाज की वर्तमान स्थिति पर दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि हमारे समाज में भी करोड़ों का दान देने वाले आर. के. मार्बल और पीएनसी जैसे अनेक परिवार हैं, जिन पर समाज को गर्व है, परंतु इनके दान का बड़ा हिस्सा साधुओं और जिनालयों की बोलियों में ही समर्पित हो जाता है। समाजोपयोगी प्रकल्पों में एक सौ करोड़ या अधिक का प्रतिवर्ष किसी उद्योग समूह का व्यवस्थित तरीके से दान हेतू बजट हो, ऐसी कोई जानकारी हमारे संज्ञान में नहीं है। पूर्व की बात करें तो साहू जैन परिवार का एक नाम लिया जा सकता है।

दूसरी तरफ वीतराग और अपरिग्रह के धारी, कुछ महाव्रति साधुओं के पास करोड़ों की संपति होने की खबरें यदा कदा सुनने को मिल जाती है। अनेक लुंगीधारी ब्रह्मचारी भैया लोगों द्वारा भी करोड़ों की संपति जमा कर लेने की बातें किसी से छिपी नहीं हैं। यह हमारे दान की धारा का प्रवाह किस तरफ है, किस तरह उसका दुरुपयोग हो रहा है, उसका एक संकेत मात्र है।

उत्कृष्ट दान और उत्कृष्ट पात्र के नाम पर हमने जनकल्याण के कार्यों को दोयम दर्जा देकर उसे समाज की प्राथमिकता से दूर कर दिया, जरूरत मंद साधर्मी परिवारों को उनके कर्मों की नियति बता कर पल्ला झाड़ लिया, धर्म में सर्वत्र धन को प्रमुख बना कर, समाज के एक वर्ग को समाज की मुख्य धारा से निष्क्रिय बना दिया और धर्म दर्शन के मुख्य सूत्र, समता की जगह विषम समाज के गठन में हम अनजाने में ही सहायक बन गए। सामाजिक प्रकल्पों के सूत्रधार भी सामाजिक संगठनों की जगह, महाव्रती साधु बन गए, गंगा उल्टी बहने लग गयी, समाज की वर्तमान स्थिति उसी का प्रतिफल है।

प्रत्येक व्यक्ति /परिवार समाज की संरचना का महत्वपूर्ण घटक होता है। हर व्यक्ति का अपना महत्व होता है। संगठित समाज से ही मजबूत राष्ट्र का निर्माण होता है। जब तक समाज के निचले वर्ग का अंतिम व्यक्ति समाज की मुख्य धारा से नहीं जुड़ता है, वह समाज निर्धन और कमजोर ही कहलायेगा, कभी भी संपन्न समाज नहीं कहला सकता। पारसी समाज में जिस परिवार की आय 90,000 हजार रुपये प्रतिमाह से कम होती है, उसे जरूरतमंद समझा जाता है, जबकि सरकार द्वारा तीन डॉलर यानि 250 रुपये प्रतिदिन से कम आय वाले को गरीबी रेखा से नीचे समझा जाता है। हमें भी अपने समाज के लिए, शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के हिसाब से, कुछ मानक तय करना समय की मांग है। धन न वरदान है, न अभिशाप, इसका मानदंड धन के सदुपयोग और दुरुपयोग पर निर्भर करता है।

प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के आचार्य पद प्रतिष्ठापना के शताब्दी वर्ष पर विशेष प्रेरक प्रसंग

हम सबका सौभाग्य है कि हमने वर्तमान कालीन श्रमण संस्कृति के स्वर्णिम युग में जन्म लिया है, जहां आज हमें श्रमण संस्कृति के उन्नायक पुरोधा सन्तों का दर्शन सर्वत्र सुलभ है। इन सबका श्रेय जाता है युग श्रेष्ठ उपसर्ग विजेता सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज को जिन्होंने अपनी श्रेष्ठतम् आध्यात्मिक साधना से श्रमण संस्कृति को पुनः जीवित किया और सम्पूर्ण विश्व में जिन धर्म की पताका फहराई।

आज उन्हीं के वर्तमान ध्वजवाहक, अक्षुण्ण मूल पट्ट परम्परा के पंचम पट्टाचार्य, वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज के चतुर्विध संघ के सान्निध्य में सम्पूर्ण राष्ट्र प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के आचार्य पद प्रतिष्ठापन के शताब्दी वर्ष पूर्ण होने पर महामहोत्सव के रूप में हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है, महोत्सव का मंगलमय शुभारंभ 13 अक्टूबर, 2024 से राजस्थान के पारसोला ग्राम में हुआ है।

आईये, हम सभी मिलकर प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के आचार्य पद प्रतिष्ठापना के शताब्दी महोत्सव के मंगल अवसर पर उनके जीवन के प्रेरक प्रसंगों का स्मरण कर अक्षुण्ण पुण्य लाभ का अर्जन करें-

जन्म काल और बाल्यावस्था - गौरवशाली प्रकाशपुंज आचार्य कुन्दकुन्द, स्वामी समंतभद्र, विद्यानन्दी, जिनसेन इत्यादि आचार्यों की जन्म भूमि तथा उपदेश से कर्नाटक प्रदेश में आचार्य श्री 108 शांतिसागर महाराज का जन्म हुआ।

सदियों तक ऐसा सुयोग प्राप्त होता है जब कोई महापुरूष जन्म लेता है जिनके व्यक्तित्व का प्रभाव दिग-दिगंत तक फैलता है। उनके द्वारा समाज को दिये गये जन हितकारी अवदान लम्बे समय तक स्मरणीय रहते हैं जो हम सबके लिए कल्याणोत्सक का मार्ग प्रशस्त करते हैं। ऐसे ही एक पुण्यशाली बालक का जन्म दक्षिण भारत के बेलगांव जिले के चिकोडी तकसील स्थित दक्षिण भारत के बेलगांव जिले के चिकोडी तहसील स्थित भोजग्राम के विपुल वैभव सम्पन्न पाटील वंश के भीमगोडा पाटील की धर्मपत्नी श्रीमती सत्यवती के गर्भ से प्रथम बालयति भगवान वासुपूज्य स्वामी के गर्भ कल्याणक के दिन आषाढ़ कृष्णा विक्रम संवत 1919 ईसवी 1872 बुधवार को अपने पिहर पितृगृह येलगुल में हुआ। जिनका जन्म नाम सातगोडा रखा गया जो आगे चलकर प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के नाम से विख्यात हुये।

बाल्यावस्था में अन्य बच्चों की तरह कभी भी रोते नहीं थे ना ही कभी किसी से लड़ाई झगड़ा और ना ही अन्य बच्चों की तरह किसी भी तरह के गन्दे खेल खेलने का शौक था।

आचार्य श्री बाल-जीवन इस प्रकार से सदाचार सम्पन्न माता-पिता की छत्र-छाया में व्यतीत हुआ और धार्मिक भावनाओं और संस्कारों के प्रभाव में उनका शैशव काल बढ़ता गया।

इस प्रकार से निसर्ग योजना में यह मणीकंचन संयोग ही था। सात गोडा की लौकिक शिक्षा बहुत कम हुई। पाठशाला में तीसरी कक्षा तक ही पढ़ पाये, शिक्षा के आदान-प्रदान की व्यवस्था भी आज की अपेक्षा में देहातों में कम ही थी। किन्तु माता-पिता के धार्मिक संस्कार ही उनके जीवनाधार बन गये। आचार्य शांतिसागर जी के परिवार का मुख्य कार्य खेती था। वे खेतों के पास पक्षियों के लिए पीने हेतु पानी रख देते थे और खेत की तरफ पीठ करके बैठ जाते थे। उन्होंने कभी पक्षियों को नहीं भगाया फिर भी उनके यहां अच्छी फसल होती थी। उनके यहां कपड़े की दुकान भी थी जिस पर वह कभी-कभी बैठते थे।

बाल्यावस्था में ही भगवान की भक्तिपूजा करना, त्यागीगणों को आहार देना, वैयावृत्य करना, दीन-दुखियों की संसगता करना जैसे कार्यों में उनकी अधिक रूचि थी।

आचार्यश्री का बाल्य जीवन इसी प्रकार सब कार्यों में व्यतीत हुआ।

श्री चंद्रसागर दिगम्बर जैन औषधालय समिति

(मुकाम, पो. चौरू तह. फागी, जिला-जयपुर)
रजि. नं. 117/1960-61

-: आवश्यकता है :-

इस आयुर्वेदिक औषधालय हेतु एक अनुभवी वैद्य की

निम्न पद हेतु योग्यता के अतिरिक्त दिगम्बर जैन आम्नाय के प्रति समर्पित शाकाहारी एवं सौम्य प्रवृत्ति वाले कर्मी की

योग्यता:- आयुर्वेदाचार्य की डिग्री साथ ही बोर्ड आफ इंडियन मेडिसिन राजस्थान से पंजीकृत होना अनिवार्य

वेतन: आपसी सहमति से निर्धारित किया जाएगा

संपर्क सूत्र: अध्यक्ष: 8094447999, कोषाध्यक्ष: 8003785520

अजमेर शहर में जैन तीर्थो की रक्षा, साधु संतों के बिहार के दौरान सुरक्षा हेतु हुआ विशाल महारैली का आयोजन

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

अजमेर, 17 जून, 2025। अजमेर शहर में जैन तीर्थक्षेत्रों की रक्षा, साधु सन्तों के विहार के दौरान आकस्मिक दुर्घटनाओं के कारण जैन मुनि, साधु-संत, सतियांजी, कालधर्म को प्राप्त होने के कारण विहार सुरक्षा हेतु आयोजित आक्रोश महारैली एवं विश्वशान्ति महामंत्र णमोकार के जयघोष के साथ आयोजित कार्यक्रम हुआ सम्पन्न। कार्यक्रम में समाज के प्रवक्ता कमल गंगवाल व संजय जैन ने बताया कि आज प्रातः 9.30 बजे स्थानीय सिटी पावर हाउस, जयपुर रोड से सकल जैन समाज, अजमेर द्वारा विशाल महारैली के रूप में णमोकार महामंत्र का जाप करते हुए कतारबंद पंक्ति से हाथों में तख्तियां व जैन ध्वजा लेकर केसरियां परिधान में व सफेद परिधान में पुरूष वर्ग भारी संख्या में जिलाधीश कार्यालय पहुंचे तत्पश्चात् कलेक्ट्रेट परिसर के मुख्य द्वार पर विश्व शान्ति महामंत्र का सामूहिक रूप से जाप कर समाज के गणमान्य प्रतिनिधि कलेक्ट्रेट कक्ष में पहुंचे और प्रधानमंत्री, भारत सरकार एंव राज्य के मुख्यमंत्री के नाम जिला कलेक्टर श्री लोकबन्धु को ज्ञापन सौंपा, जिस पर कलेक्टर महोदय ने ज्ञापन को तत्काल प्रभाव से आगे भेजने की व स्थानीय स्तर पर भी इसकी ठोस कार्यवाही व सुरक्षा का आश्वासन दिया ज्ञापन में निम्न मांग की गई -

1. साधु सन्तों का जब भी विहार हो उस समय पुलिस सुरक्षा व्यवस्था मार्ग में की जावे जिससे यातायात व्यवस्था दुरूस्त हो सके तथा दुर्घटनायें ना हो।

2. जैन तीर्थ स्थलों पर हो रही लगातार वारदातों, चोरियों को रोकने के लिये संबंधित राज्य सरकार द्वारा पुख्ता बंदोबस्त करने के निर्देश दिये जावें और असामाजिक तत्वों पर सख्त कार्यवाही की जावें ताकि ऐसी घटनाओं की पुनरावृति ना हो।

3. साधु सन्तों को टक्कर मार कर भागने वाले ड्राईवरों के लिये प्रदेश भर में धारा 106 (बीएनएस) में मुकदमा दर्ज किया जावे।

4. अनिवार्य फुटपाथ और सड़क सुरक्षा ढांचा सभी प्रमुख सडकों, राजमार्गो पर विशेषकर साधु-सन्तों, श्रद्धालुओं व सामान्य पद यात्रियों द्वारा प्रयुक्त मार्गो पर कम से कम 3 फीट चौड़ा व एक फीट उंचा फुटपाथ मय रेलिंग के बनाई जावे।

5. सड़क डिवाईडर और यातायात नियमों का कडाई से पालन, सड़क पर डिवाईडर स्थापित कर यातायात नियमों का सख्ती से पालन सुनिश्चित किया जावे ताकि पदयात्रियों की सुरक्षा हो और दुर्घटनाओं का खतरा भी कम हो।

6. राष्ट्रीय पदयात्री सुरक्षा मिशन का शुभारंभ पदयात्रियों, विशिष्ट रूप से साधु-सन्त एवं तीर्थ यात्रियों की सुरक्षा हेतु एक विशेष कार्यक्रम प्रारंभ किया जावे। यह केवल पूज्य गुरूदेवों के लिये ही नहीं बल्कि भारत की सड़कों पर चलने वाले हर जीवन की सुरक्षा एवं गरिमा के लिए है, ज्ञापन देने वाले व महारैली में भाग लेने वालों में नीरज जैन, विजय जैन, कमल गंगवाल, संजय जैन, पवन बढारी बिरला, धर्मेश जैन, प्रवीण जैन, अशोक छाजेड़, विकेश जैन, अतुल ढिलवारी, अनुराग जैन, प्रकाश पाटनी, विनोद ढाबरिया, नाथूलाल जैन, प्रदीप पाटनी, सुशील बाकलीवाल, राजेश गदिया, बसंत सेठी, मुकेश करनावट, सुनील ढिलवारी, गौतम जैन, नीरज कोठारी, पीयूष सुराना, रूबी जैन, हरकचंद बोथरा, नितिन जैन, हेमेन्द्र जैन, लोकेश जैन, सुरेशचंद खींवसरा, विपिन जैन, विजय पांडया, देवर्ष गंगवाल, ताराचंद सेठी, डा. राजकुमार गोधा, निर्मल गदिया, विनय लोढा, कमल बाफना, विक्रम पारख, चन्दप्रकाश जैन, विनीता जैन, शान्ता काला, नीलू कांकरिया, वनिता मोदी, प्रतिभा कोठारी, स्बी जैन, मोना जैन, सीमा जैन, खुशबू जैन, अमित वेद, रिपेंद्र कासलीवाल, दीपक जैन, मनीष जैन, एहवंत मोदी, मोहित गांधी, रिखबचंद सचेती, विवेक जैन, अमित जैन, विकास लोढा, विनय लोढा दिनेश मेहता, ललित जैन किशोर कासलीवाल, ज्ञानसिंह लोढा, राकेश बरमेचा, मुकेश सेठी, सम्पत कोठारी, गौरव तांतेड, राजकमल चोपडा, सुनील खटोड, अजय बाफना, मुकेश जैन रहे।

आचार्यश्री वर्धमान सागर जी एवं आचार्यश्री सुन्दर सागरजी ससंघ को श्रीफल भेंट किया

पारस जैन "पार्श्वमणि", संवाददाता

टोंक। दिगंबर जैन समाज पुरानी टोंक राजस्थान ने परम पूज्य आचार्य श्री 108 श्री सुन्दर सागर जी महाराज को तालेड़ा पहुंच कर टोंक आगमन के लिए श्रीफल भेंट किया। उसके पश्चात् परम पूज्य आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज काछोला (भीलवाड़ा) में टोंक आगमन हेतु श्रीफल भेंट किया। विगत् 35 वर्षो से पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले पारस जैन पार्श्वमणि पत्रकार कोटा ने बताया कि इस अवसर पर सरावगी समाज के अध्यक्ष श्री शैलेंद्र जैन, तेरापंथ समाज के अध्यक्ष सुरेंद्र जैन जयपुरिया, प्रकाश पटवारी जैन, पदम कुमार जैन, चेतन कुमार जैन, पारस जैन सोनी, निर्मल कुमार जयपुरिया, अशोक जैन छाबड़ा, अजय सोनी, बाबू बाकलीवाल, कुशाल जैन चौधरी, खेमचंद बिलासपुरिया, जितेंद्र कासलीवाल आदि श्रावक श्रेष्ठी उपस्थित थे। मुनि श्री ने सबको आशीर्वाद दिया एवं उसके पश्चात स्वस्ति धाम जहाजपुर पहुंचकर श्री 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान एवं श्री 105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त कर टोंक के लिए प्रस्थान किया। यात्रा अविस्मरणीय यादगार रही।

पी. यू. जैन विद्यालय में प्रतिभाशाली विद्यार्थी सम्मान समरोह

एम. सी. जैन, पत्रकार

चिकलठाणा (महाराष्ट्र) औरंगाबाद (छ. संभाजी नगर) के पी. यू. जैन, विद्यालय मे 17 जून 2025 को प्रतिभाशाली विद्यार्थी सम्मान समरोह का आयोजन किया था। महाराष्ट्र के प्रख्यात होमिओपैथी विशेषज्ञ, होमिओपैथी ग्रंथों के लेखक, एम यू एच एस के सदस्य, भूतपूर्व प्राचार्य, प्रा. डा. राजेश एम. पाटणी प्रमुख अतिथि थे। प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं का सम्मान किया गया। इस अवसर पर महावीर सेठी, सौ. आशाजी काला, महावीर ठोलिया, महावीर पाटनी, प्रकाश कासलीवाल, देवेंद्रजी काला, हेमंत बाकलीवाल आदि उपस्थित थे।अतिथि प्रा. डा. राजेश एम पाटणी के हस्ते दीप प्रज्वलन किया गया।

आचार्य श्री 108 प्रमुख सागर जी महाराज ससंघ का कोलकाता में 29 जून को होगा मंगल प्रवेश

पुनीत जैन

पुष्पगिरी तीर्थ के प्रणेता परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 पुष्पदंत सागर जी महाराज के प्रियाग्र शिष्य, अहिंसा तीर्थ प्रणेता, महान दिगम्बर जैनाचार्य श्री 108 प्रमुख सागर जी महाराज अपने 13 पिच्छियों के साथ आगामी रविवार, 29 जून 2025 को प्रातः लगभग 8:00 बजे कोलकाता महानगर की वसुंधरा को अपने पावन पुनीत दिव्य चरणों से पवित्र करते हुए श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, बेलगछिया में मंगल प्रवेश करेंगे। आराध्य की आगवानी को उत्साहित आप सभी कोलकाता समाज का वर्षों से चल रहा तप, सेवा और समर्पण अब साकार रूप लेने जा रहा है। कोलकाता में चातुर्मास कराने हेतु पिछले 3-4 वर्षों से किया गया प्रयास अब अपने अंतिम, सफल पड़ाव पर है। इस पुण्य अवसर पर हम समस्त समाज बंधुओं से सादर विनम्र आग्रह करते हैं कि इस ऐतिहासिक, अध्यात्मिक एवं भावपूर्ण मंगल प्रवेश में सपरिवार पधारकर पूज्य आचार्य श्री ससंघ की पावन अगवानी करें और इस दुर्लभ पुण्य अवसर का लाभ प्राप्त करते हुए अपने जीवन के इस गौरवशाली दिवस को चिरस्मरणीय बनाएं।

चंवलेश्वर तीर्थक्षेत्र से हुआ आचार्य वर्धमान सागर जी का विहार

चंवलेश्वर पार्श्वनाथ देशनोदय दिगंबर तीर्थक्षेत्र से वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी गुरुदेव का शुक्रवार 20 जून, 2025 को दोपहर मीरा नगर विहार हुआ। रात्रि विश्राम मीरा नगर हुआ। जिसमें निकट नगरों के श्रावक व श्राविकाएं मंगल विहार में साथ चल रहे थे। मंगल विहार जहाजपुर की ओर चल रहा था। तीर्थक्षेत्र कमेटी अध्यक्ष प्रकाश कासलीवाल व महेन्द्र जैन ने बताया कि प्रातः धर्म सभा में चंवलेश्वर पार्श्वनाथ भगवान पार्श्वनाथ के चित्र पर दीप प्रज्वलन, चरण प्रक्षालन एवं जिनवाणी भेंट सौभाग्यशाली परिवारों द्वारा की गई। राजेश पंचोलिया ने बताया कि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने प्रवचन में कहा कि कर्मों की निर्जरा तो प्रभु भक्ति से ही होती है, ऐसे बुरे कर्मों से तो आप अपनी आत्मा को ही मलिन कर रहे हो। यह जैन धर्म तो बहुत पुराना

धर्म है। आज आपका वजूद है तो यह सबसे पुराना मंदिर चंवलश्वर पार्श्वनाथ का मंदिर भी है। आप सबसे पहले अपने माता व पिता को ही गुरू मानो और उनकी निश्चल मन व भाव से सेवा करो क्योंकि वो ही आप के किये हुए कर्मों का नाश करते हैं फिर बाद में गुरूओं व साधु संतों की सेवा करो, इसलिए जैन धर्म की प्रभावना बढ़नी चाहिए, यह कार्य तो हर जैन श्रावक का ही है। काछोला में एक भी जैन परिवार नहीं रहता है, 17 जून को आचार्य संघ की आहार चर्या एवं रात्रि विश्राम हुआ, आचार्य श्री ससंघ चर्या को देखकर काछोला में माहेश्वरी परिवारों के 120 घर के सभी सदस्यों ने एकत्रित होकर आचार्य श्री के सम्मुख निवेदन करते हुए कहा कि आचार्य श्री जी आपका काछोला में चातुर्मास कीजिए, हम सभी 120 परिवार मिलकर एक नया इतिहास रचेंगे। हम आपके श्री संघ के प्रति तन मन और धन से पूर्ण समर्पित हैं। इस दौरान काछोला थाना प्रभारी, सरपंच सहित गांव के पंच उपस्थित रहे।

कमेटी अध्यक्ष प्रकाश कासलीवाल, मंत्री कैलास सौगानी, कोषाध्यक्ष भागचंद बंसल ने बाहर आसपास के सभी गांवों व शहर से आये हुऐ श्रावकों व श्राविकाओं का स्वागत किया।

णमोकार तीर्थ चांदवड नाशिक के भव्य पंचकल्याणक महोत्सव के लिए उपराष्ट्रपति जी ने दी सहमति

नरेंद्र अजमेरा पियुष कासलीवाल, औरंगाबाद

औरंगाबाद। दिल्ली में प्रफुल्लजी पटेल के नेतृत्व में णमोकार तीर्थ के पदाधिकारियों ने उपराष्ट्रपति श्री जगदीशजी धनखड जी से मुलाकात कर उन्हें निमंत्रण दिया, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वागत कर पंचकल्याणक के दौरान उपस्थित रहने हेतु सहमति प्रदान की।

इस टीम में सांसद श्री प्रफुल्लजी पटेल एवं महोत्सव समिति के अध्यक्ष संतोषजी जैन पेंढारी के नेतृत्व में संतोषजी काला, विजयजी लोहाडे, भूषणजी कासलीवाल, सुमेरजी काला, पवनजी पाटणी शामिल थे। गौरतलब है कि प. पू. आचार्य श्री देवनन्दीजी गुरुदेव के कल्पना से साकार हो रहे णमोकार तीर्थ पर परम पूज्य गणधराचार्य श्री

कुंथुसागरजी गुरुदेव के प्रमुख उपस्थिती एवं युगल मुनिश्री अमोघकिर्तीजी एवं अमरकिर्तीजी गुरुदेव के मार्गदर्शन में 6 से 13 फरवरी 2026 को भव्य अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक महोत्सव होने जा रहा है। जिसमें 400 से ज्यादा जैन साधु उपस्थित रहने वाले हैं। ट्रस्ट अध्यक्ष नीलम जी अजमेरा ने कहा कि धनखड जी की सहमति मिलने से उत्साह का माहौल है। इसी महोत्सव में आर एस एस प्रमुख श्री मोहनजी भागवत भी 10 फरवरी को उपस्थित रहने वाले हैं।

बड़वानी जिले के मंडवाड़ा गांव में खुदाई में प्राप्त हुई जैन तीर्थंकर प्रतिमाएं

डेब नदी के तट पर बसा मंडवाड़ा गांव ढेड़ हजार वर्ष से अधिक प्राचीन है, पुराना नाम है मदनपुर

ओम पाटोदी

बदनावर (इंदौर)। हाल ही में पिछले सप्ताह बड़वानी जिले की ठीकरी तहसील के ग्राम मंडवाड़ा से आठ जैन प्रतिमाएं प्राप्त हुई थीं जिन्हें समाज जन व ग्रामीणों ने प्रसिद्ध दिगम्बर जैन तीर्थ बावनगजा स्थित जैन संग्रहालय में भिजवा दिया है।

उक्त जानकारी देते हुए वर्धमानपुर शोध संस्थान के ओम पाटोदी ने बताया कि इस सम्बन्ध में जानकारी निकालने पर अजंड निवासी समाजसेवी धर्मेंद्र जैन एवं अभय बोहरा ने बताया कि यहां आसपास के गांवों से आए दिन जैन प्रतिमाएं निकलती रहती हैं, अभी कुछ महीने पहले ही यहां से भगवान श्री नेमीनाथ स्वामी की एवं पास के ही धनौरा ग्राम से ग्यारवें तीर्थंकर भगवान श्री श्रेयांसनाथ स्वामी की प्रतिमा प्राप्त हुई थी। बाकानेर निवासी श्रीमती बरखा बड़जात्या ने बताया कि तारापुर घाट में भी अति प्राचीन जैन मंदिर है, वहां भी तीर्थंकर प्रतिमाएं प्राप्त होने की पूरी सम्भावना है।शासन के भय से मूर्तियां नदी में प्रवाहित कर देते हैं - यहां के लोग बताते हैं कि मंडवाड़ा गांव से सैकड़ों प्रतिमाएं निकल चुकी हैं। देवी-देवताओं की प्रतिमाएं स्थानीय मंदिरों में रख देते हैं और अन्य प्रतिमाएं वे नदी में प्रवाहित कर देते हैं, उनका कहना है कि यदि मूर्तियां निकलने की बात पुरातत्व विभाग को लगेगी तो उनके निर्माण कार्यों में बाधा आ सकती है। यह गलत धारणा के चलते हजारों वर्षों के इतिहास की जानकारी प्रकाश में आने की बजाय पुनः भूमिगत

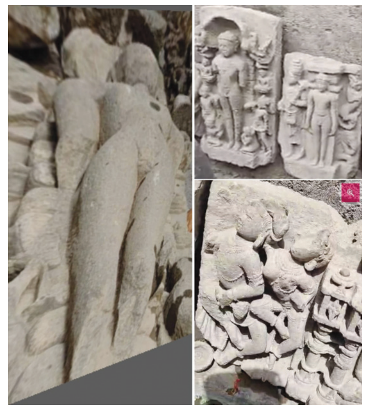

हो जाती है। शासन के द्वारा जनसाधारण को जागरूक करते रहना चाहिए जिससे इतिहास की परतें खुल सकें और जनता में व्याप्त अनावश्यक भय समाप्त हो सके। पाटोदी ने बताया कि हाल ही में जो आठ प्रतिमाएं प्राप्त हुई उनमें भगवान पार्श्वनाथ जी के अलावा तीर्थंकर यक्ष रक्षिणी एवं अन्य तीर्थंकर प्रतिमाएं हैं इनमें एक बड़ी प्रतिमा जो लगभग 8 - 10 फीट की है वह पंचबालयति तीर्थंकर प्रतिमा है। धर्मेंद्र जैन के अनुसार यहां पर अधिकतर पंचबालयति प्रतिमाएं प्राप्त होती हैं। मंडवाड़ा से प्राप्त 1000 वर्ष पूर्व के शिलालेख अनुसार इस नगर का प्राचीन नाम मदनपुर रहा है जहां पूर्व में हजारों की जैन बस्ती होने का अनुमान है क्योंकि वर्तमान में भूगर्भ से यहां पर सैकड़ों प्रतिमाएं प्राप्त होती हैं जो लगभग 1500 से 1700 वर्ष प्राचीन होती हैं वहीं कुछ प्रतिमा परमार कालीन भी प्राप्त होती है।

गिरनार के लिये समाज से मुनिश्री सुधा सागरजी का आह्वान

राजेश जैन दद्दू

गिरनार के लिये समाज से मुनिश्री सुधा सागरजी महाराज ने आह्वान किया कि 2 जुलाई को निर्वाण दिवस पर कम से कम एक लाख लोग गिरनार जी पहुंचना चाहिये। यह सरकार की जिम्मेदारी है कि 2 जुलाई को भारतीय सेना की सुरक्षा वहां जैनियों को दें जिससे जैन समाज बिना किसी विघ्न बाधा के अपनी भक्ति कर नेमीनाथ भगवान को निर्वाण लाडू समर्पित कर सके।

जैन मंदिर में हुई चोरी के विरोध में जैन समाज ने कलेक्टर को सौंपा ज्ञापन

ब्यावर। अजमेर रोड स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में हाल ही में हुई चोरी की घटना के विरोध में सकल जैन समाज, ब्यावर के तत्वावधान में एक मौन जुलूस निकाला गया और जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा गया। जैन समाज के प्रवक्ता अमित गोधा ने जानकारी दी कि समाज के सैकड़ों महिला-पुरुष सदस्य प्रातःकाल महावीर सर्किल अजमेरी गेट से शांतिपूर्वक मौन जुलूस के रूप में रवाना हुए और जिला कलेक्टर कार्यालय पहुंचकर विरोध प्रकट किया। ज्ञापन में बताया गया कि दिनांक 14 जून 2025 को मंदिर में अज्ञात चोरों ने प्रवेश कर प्राचीन श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा, चांदी के छत्र, चांदी के कलश सहित अन्य पूजनीय वस्तुएं चोरी कर लीं। यह घटना संपूर्ण जैन समाज की धार्मिक आस्था व भावनाओं पर गहरा आघात है, जिससे समाज में गहरा आक्रोश व्याप्त है।

समाज की प्रमुख माँगें: 1. अपराधियों की शीघ्र गिरफ्तारी हो।
2. चोरी गई धार्मिक व पूज्य वस्तुएं तुरंत बरामद की जाएं।
3. मंदिरों की सुरक्षा हेतु सख्त और स्थायी उपाय किए जाएं।

इस अवसर पर समाज ने एकजुटता का परिचय देते हुए अपनी सामूहिक आवाज बुलंद की और प्रशासन से त्वरित कार्रवाई की मांग की। समाज ने चेतावनी दी कि यदि समय रहते उचित कार्रवाई नहीं की गई तो आंदोलनात्मक कदम उठाने पर विचार किया जाएगा। उपस्थित प्रमुख पदाधिकारी एवं प्रतिनिधिः श्री अशोक काला (अध्यक्ष, दिगंबर जैन पंचायत), श्री पारस कासलीवाल (अध्यक्ष, मारवाड़ी समाज), श्री संजय रांवका (अध्यक्ष, श्री पार्श्वनाथ मंदिर), श्री दिनेश अजमेरा (मंत्री), नितिन छाबड़ा (मंत्री), संजय गंगवाल (मंत्री) विजय फगीवाला, सुमन धगड़ा, प्रकाश गदिया, राजू ओस्तवाल, महावीर बाफना, अशोक रांका, पीयूष रांका, संजय नाहर, राजू सेठिया, मनीष मेहता, राहुल ओस्तवाल, भूपेश भंसाली, विकल कासलीवाल, कमल रावका, विरेंद्र गोधा, आशीष गदिया, सुनील रांवका, सिद्धार्थ श्रीश्रीमाल, मुकेश जैन, पंकज डेडिया, अनिल गंगवाल, अरुण शास्त्री, घनश्याम शास्त्री, अंशुल रानीवाला, अक्षत कटारिया, मनोज सोगानी सहित अनेक गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे। **उपस्थित संगठनः** श्री दिगंबर जैन पंचायत, श्री मारवाड़ी दिगंबर जैन पंचायत, श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, श्री विधा सागर युवा संगठन, श्री दिगंबर जैन युवा मंडल, श्री आदिनाथ दिगंबर जैन युवा मंडल, श्री पार्श्वनाथ महिला मंडल, श्री आदिनाथ महिला मंडल, श्री ज्ञानोदय महिला एवं बहू मंडल, श्री विद्या महिला मंडल, श्री दिगंबर जैन महासमिति, श्री दिगंबर जैन पुरुष महासमिति, श्री जैन सोशल ग्रुप।

महासभा

शोक संदेश

बड़े दुःख के साथ सूचित कर रहे हैं कि
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा चैरिटेबल ट्रस्ट के सम्मानित ट्रस्टी
श्री संदीप जैन जी (गुड़गांव) के पिताश्री

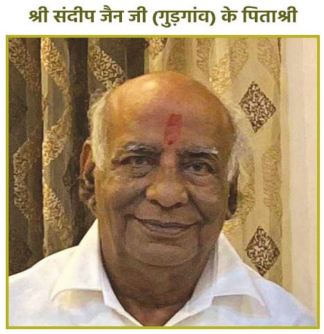

श्री रमेश चंद जी जैन (झाडसा वाले)
(पूर्व प्रधान जैन समाज गुड़गाँव, परम संरक्षक श्री सिद्धांत तीर्थ शिकोहपुर)
का आकस्मिक स्वर्गवास
दिनांक 21/06/2025 शनिवार प्रातः 5.00 प्रातः हो गया है।

ॐ शान्ति-ॐ शान्ति-ॐ शान्ति

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा परिवार
समाज की। समाज द्वारा। समाज के लिए
djainmahasabha djainmahasabha djainmahasabha djainmahasabha digjainmahasabha.org

एपीपीएस का राष्ट्रीय अधिवेशन 16/17 अगस्त को गोलाकोट में होगा

मुरैना (मनोज जैन नायक)। अविवाहित प्रतिभाएं प्रस्तुति समूह का राष्ट्रीय अधिवेशन अतिशय क्षेत्र गोलाकोट में तीर्थ वंदना के साथ 16 एवं 17 अगस्त को होने जा रहा है। श्री दिगम्बर जैसवाल जैन उपरोचियां समाज की संस्था अविवाहित प्रतिभाएं प्रस्तुति समूह के राष्ट्रीय संयोजक अजय जैन शिवपुरी एवं रविन्द्र जैन जमूसर भोपाल द्वारा प्रदत्त जानकारी के अनुसार एपीपीएस का दो दिवसीय तृतीय राष्ट्रीय अधिवेशन तीर्थ वंदना के साथ श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र गोलाकोट (खनियाधाना) में 16 एवं 17 अगस्त को होना सुनिश्चित हुआ है। उक्त अधिवेशन में विवाह योग्य सजातीय बच्चों के सगाई संबंधों पर विशेष रूप से विचार विमर्श किया जाएगा। साथ ही विवाह योग्य बच्चों के सम्पूर्ण परिचय एवं फोटो सहित बहुरंगीन परिचय पुस्तिका के प्रकाशन पर भी चर्चा की जाएगी। 2000 बच्चों की

परिचय पुस्तिका एवं परिणय एप का संचालन - एपीपीएस संस्था का मुख्य उद्देश्य श्री दिगंबर जैसवाल जैन उपरोचियां समाज के सजातीय विवाह योग्य बच्चों के रिश्ते अधिकाधिक संख्या में कराना हैं। इस हेतु संस्था निरंतर प्रयास कर रही है। संस्था ने इस कार्य को सरल बनाने हेतु माह के प्रत्येक रविवार को वाट्स एप के माध्यम से बच्चों के बायोडाटा प्रसारित करना शुरू किया, विगत वर्ष 2000 बच्चों के सम्पूर्ण परिचय के साथ एक बहुरंगीन परिचय पुस्तिका का प्रकाशन किया था। साथ ही जैसवाल जैन परिणय एप का संचालन भी किया जा रहा है। दोनों ही माध्यम से सजातीय बंधु अपनी पसंद के साथ वर वधु का चयन कर सकते हैं। संस्था के इस पुनीत कार्य को सभी ने सराहा है और उनके इस प्रयास के माध्यम से समाज में निरंतर बच्चों के सगाई संबंध निश्चित हो रहे हैं।

मध्य प्रदेश गौरव गान का हुआ भव्य अनावरण

शहर के सुप्रसिद्ध गायक चिंतन बाकीवाला ने दिए स्वर
मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने किया गीत का अनावरण

पारस जैन "पार्श्वमणि", संवाददाता

इंदौर। मध्य प्रदेश के गौरव को जन-जन तक पहुंचाने और इसकी विशेषताओं से रूबरू करवाने के लिए कलाकार सी बी रॉक स्टार चिंतन बाकलीवाला ने 'मध्य प्रदेश गौरव गान' गाया है। इसका लॉन्चिंग मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अपने पावन पवित्र करकमलों से किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारे प्रदेश के गौरवमयी इतिहास को देश-दुनिया तक पहुंचाने का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है। इसके दृष्टिगत, भविष्य में इस गीत के वीडियो प्रारूप को तैयार करने और अधिक से अधिक लोगों, विशेष रूप से युवा वर्ग में वायरल करने में प्रदेश सरकार हरसंभव सहयोग प्रदान करेगी। इस गीत के गायक सी बी रॉक स्टार चिंतन बाकलीवाला, संगीत संयोजक केशव राय हैं और लेखक सुरेश शर्मा हैं। चिंतन बाकलीवाला ने विगत् 35 वर्षों से पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले पारस जैन ''पार्श्वमणि'' पत्रकार कोटा को बताया कि मैंने अपने देश, शहर और मातृभाषा के लिए कई गीत गाए हैं, लेकिन मेरे मन में ये मलाल रहता था कि मैंने इस तरह का कोई प्रयास मध्य प्रदेश को लेकर नहीं किया था। इसी के चलते मैंने ये गीत गाया है। गीत के बोल कुछ इस प्रकार हैं - ''प्यारा मध्य प्रदेश हमारा, ये समृद्ध जन-गण। संस्कृति और मातृभूमि ये, संबंध सबका मन का...।।

आशीर्वाद जहाँ होता है वहाँ सफलता स्वतः पथ बना लेती है

श्री गजराज जैन गंगवाल जी को परम सौभाग्य प्राप्त हुआ कि उन्हें णमोकार तीर्थ के प्रणेता परम पूज्य ज्ञानयोगी प्रज्ञाश्रमण सारस्वताचार्य देवनंदी जी 'गुरुदेव' का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। गुरुदेव ने अपने दिव्य सान्निध्य में श्री गजराज जी को महासभा एवं धर्मकार्य में सक्रिय रहने, समर्पित भाव से समाजसेवा करते रहने तथा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा जैसे महायज्ञ में तन-मन-धन से सहभागिता हेतु प्रेरित किया। गुरुदेव का यह आशीर्वचन न केवल व्यक्तिगत गौरव का विषय है, बल्कि सम्पूर्ण आयोजन समिति एवं समस्त जैन समाज के लिए भी एक धार्मिक ऊर्जा एवं आध्यात्मिक बल का स्रोत है। श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा (महाराष्ट्र प्रदेश) के पदाधिकारियों का एक विशेष प्रतिनिधिमंडल अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हेतु दिल्ली स्थित महासभा कार्यालय में पधारे। श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा (महाराष्ट्र प्रदेश) के पदाधिकारी एवं महामहोत्सव समिति णमोकार तीर्थ (महाराष्ट्र), श्री संतोष कुमार जी जैन (पेंढारी) नागपुर अध्यक्ष पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव, श्री सुमेर कुमार जी काला (नासिक) राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, श्रुत संवर्धिनी महासभा के अध्यक्ष गजपंथा तीर्थक्षेत्र ट्रस्टी

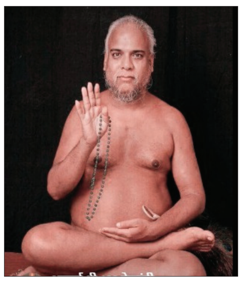

णमोकार तीर्थ, श्री संतोष जी काला- नांदेड़ ट्रस्टी णमोकार तीर्थ, श्री भूषण जी कासलीवाल - चांदवड (नासिक) नगराध्यक्ष चांदवड नगरपालिका एवं ट्रस्टी णमोकार तीर्थ,श्री पवन जी पाटनी - नासिक अध्यक्ष एवं श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा चैरिटेबल ट्रस्ट सम्मानित ट्रस्टी,अंजनगिरि तीर्थ क्षेत्र तथा ट्रस्टी णमोकार,श्री विजय जी लोहडिया -नासिक कोषाध्यक्ष ट्रस्टी -णमोकार तीर्थ चांदवड नासिक पदाधिकारियों का एक विशेष प्रतिनिधिमंडल 20 जून 2025 को दिल्ली स्थित महासभा कार्यालय में सादर उपस्थित हुआ तथा श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा दिल्ली, कार्यालय में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जैन गंगवाल जी को अंतर्राष्ट्रीय पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के लिए आमंत्रित एवं भव्य सम्मान किया। इस गरिमामय अवसर पर महाराष्ट्र प्रदेश महासभा के प्रमुख पदाधिकारियों ने महोत्सव की रूपरेखा, धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के बारे में जानकारी साझा की तथा सभी श्रद्धालुओं एवं पदाधिकारियों से इस ऐतिहासिक आयोजन में सहभागिता करने का विनम्र अनुरोध किया। दिल्ली स्थित श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा कार्यालय में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जैन गंगवाल जी ने प्रतिनिधिमंडल का भव्य स्वागत किया एवं सभी से इस धार्मिक उत्सव को सफल बनाने के लिए अपना समर्थन व्यक्त किया।

सेल्फडिफेंस के कार्यक्रम का शुभारंभ

श्रुत संवर्धिनी महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. निर्मल कुमार जैन के द्वारा रविवार दिनांक 15.06.2025 ज्योति कॉलोनी, शारदा दिल्ली के जैन मंदिर में जैन मंच महिला के द्वारा चलाए जा रहे सेल्फडिफेंस के कायक्रम का शुभारंभ किया, जिसके अंतर्गत 50 से अधिक छात्राओं को संस्था द्वारा सेल्फडिफेंस सिखाया जाएगा। डॉक्टर निर्मल कुमार जैन ने सभा को संबोधित करते हुए महासभा की चलाई जा रही विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताया तथा बच्चों को सेल्फडिफेंस का महत्व भी समझाया। जैन मंच महिला प्रकोष्ठ ज्योति कॉलोनी की अध्यक्ष श्रीमती सविता जैन एवं मंदिर के अध्यक्ष श्री संजय जैन जी ने डॉक्टर निर्मल कुमार जैन जी का स्वागत किया तथा महासभा के द्वारा चलाई जा रही विभिन्न गतिविधियों की प्रशंसा की। सभा में श्री अनुपम जैन, महामंत्री विदुषी जैन, सांस्कृतिक मंत्री मधु जैन, कोषाध्यक्ष एवं समाज के वरिष्ठ पदाधिकारी कुंवर सैन जैन तथा विशाल जैन आदि भी सभा में उपस्थित थे।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा के महामंत्री श्री राजकुमार जैन सेठी की बहिन श्रीमती चंदादेवी पाटनी धर्मपत्नी स्व. केवलचंद पाटनी, संरक्षिका तीर्थ संरक्षिणी महासभा डीमापुर का दिनांक 14 जून 2025 को देवलोक गमन हो गया। जिनेन्द्र प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोकाकुल परिवार को यह असीम दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

शोक संदेश

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित कर रहे कि हमारे पूजनीय पिता जी श्री दिनेश कुमार जैन (सुपुत्र श्री जयचन्द जैन) का स्वर्गवास रविवार, 15 जून 2025 को हो गया है। प्रभु की ऐसी ही इच्छा थी। ईश्वर उन्हें अपने श्री चरणो में स्थान दे। शोकाकुल परिवार में (पुत्र) रिषभ जैन, हार्दिक जैन, (धर्मपत्नी) श्रीमती प्रज्ञा जैन एवं श्री राकेश जैन, श्री महेश जैन, श्री उमेश जैन, श्री संजय जैन, गौरव जैन, रोहित जैन, संयम जैन, सक्षम जैन, सिद्धार्थ जैन, ऋषि जैन। शोकाकुल- अरिहंत मेडिकल स्टोर, बड़ौत एवं समस्त असारा जैन परिवार

कोलकाता में पावन वर्षायोग

कोलकाता। परम पूज्य गणिनी आर्यिका श्री 105 सौम्यनंदनी माता जी की प्रथम शिष्या गणिनी आर्यिका श्री 105 सुयोग्यनंदनी माता जी ससंघ श्री पार्श्वनाथ दिग्म्बर जैन उपवन मंदिर जी बेलगाछिया जी में विराजमान हैं। माता जी ससंघ का 2025 का पावन वर्षायोग चौरंगी जैन समाज कोलकाता को मिला है। कोलकाता एवं बृहत्तर कोलकाता जैन समाज के सभी भव्य जीवों को बहुत बहुत बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

महासभा

श्रीमती चंदादेवी पाटनी

स्वर्गवास 14 जून-2025

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा के महामंत्री श्री राजकुमार जैन सेठी की बहन श्रीमती चंदादेवी पाटनी धर्मपत्नी स्व. केवलचंद पाटनी, संरक्षिका तीर्थ संरक्षिणी महासभा डीमापुर का दिनांक 14 जून 2025 को देवलोक गमन हो गया। जिनेन्द्र प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोकाकुल परिवार को यह असीम दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

ॐ शान्ति-ॐ शान्ति-ॐ शान्ति

गजराज जैन गंगवाल (राष्ट्रीय अध्यक्ष)

रमेश जैन तिजारिया (राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष) | प्रकाशचंद जैन बड़जात्या (राष्ट्रीय महामंत्री) | पवन जैन गोधा (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष)

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

समाज की। समाज द्वारा। समाज के लिए

djainmahasabha djainmahasabha djainmahasabha djainmahasabha digjainmahasabha.org

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 1. गुरूजी, जय जिनेन्द्र, पत्नी के पैरों में छाले पड़ गये हैं, काफी इलाज कराया मगर कोई लाभ नहीं हो रहा है। डाक्टरों के अनुसार कोई उपाय नहीं है - मनोज गोयल, दिल्ली

उत्तर - आपकी पत्नी की कुंडली में चल रही बुध की अन्तर्दशा के कारण ऐसा है। आप श्री विमलनाथ विधान मन्दिर जी में करायें, अवश्य लाभ होगा।

प्रश्न 2. मेरा 8 साल का बेटा चलते-चलते अचानक गिर जाता है। हर वक्त थका हुआ रहता है। समझ नहीं आता क्या करें ? - शिविका जैन, अल्मोड़ा

उत्तर - बेटे को 8 से 9 रत्ती के बीच मूंगा रत्न मंगलवार को धारण करायें, सात शनिवार काले उड़द 100 ग्राम दान करें।

प्रश्न 3. गुरूजी, जय जिनेन्द्र! मेरे भाई को क्रोध बहुत आता है, माता-पिता को भी अपशब्द बोलता है। हम क्या करें ? - ज्योति जैन, लश्कर (म.प्र.)

उत्तर - भाई को चांदी के गिलास में पानी पीने को दें, मून स्टोन का लॉकेट सोमवार को धारण करायें।

प्रश्न 4. गुरूजी, मेरा साला नशा करता है, क्या उपाय है ? - प्रवीण जैन, मयूर विहार, दिल्ली

उत्तर - राहु के प्रभाव के कारण ही ऐसा होता है, गौशाला में शनिवार को खल दान करायें 10 किलो। श्री नेमीनाथ चालीसा सुनायें।

गुरु जी से संपर्क सूत्र-
9990402062
8826755078

विश्व योग दिवस पर

सहजता ही वास्तविक योग है

- प्रो. अनेकान्त कुमार जैन, नई दिल्ली

जैन परंपरा में त्रिगुप्ति का सिद्धांत योग विद्या का प्राण है। मन गुप्ति, वचन गुप्ति और काय गुप्ति अर्थात् मन वाणी और काया की क्रिया पर पूर्ण नियंत्रण। शास्त्रों में मन के संदर्भ में कहा गया है - मन एवं मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः। बन्धाय विषयासक्तं मुक्त्यै निर्विषयं स्मृतम।। अर्थात् - मन ही मानव के बन्ध और मोक्ष का कारण है, वह विषयासक्त हो तो बन्धन कराता है और निर्विषय हो तो मुक्ति दिलाता है।

वर्तमान में डिप्रेशन एक ऐसी बीमारी है जिसका गहरा संबंध हमारे मन और अवचेतन मन से है। यह बीमारी एक दिन में विकसित नहीं होती, इसमें एक लंबा समय लगता है। जब यह विकराल रूप धारण कर लेती है तब हमें थोड़ा पता चलता है और पूरा पता तब चलता है जब इसके दुष्प्रभाव झेलने में आते हैं। इसके हजारों कारण हैं। उनमें से एक कारण है असहज जीवन को ही सहज समझने की लगातार भूल।

डिप्रेशन की अनेक वजहों में एक बड़ी वजह स्वाभाविक अभिव्यक्ति में आने वाली लगातार कमी भी है। आपको जब गुस्सा आ रहा हो और आप सिर्फ इसीलिए अभिव्यक्त न कर पायें कि कोई फोन रिकॉर्ड कर लेगा, वीडियो बना लेगा, सी सी टी वी में कैद हो जायेगा और यह सब कुछ बिना वजह उनके सामने उस समय पेश किया जायेगा जिनसे जिस वक्त गुस्सा छोड़कर आपने किसी तरह सम्बन्ध अच्छे बना लिए हैं और सब कुछ शांति से चल रहा है।

तब इन्हीं कुछ कारणों से लोग मित्रों, रिश्तेदारों तक से अपना हृदय खोलने में घबड़ा रहे हैं। इस प्रकार की प्रवृत्ति परिवार, समाज, कार्यालय, शिक्षा संस्थान आदि में एक कृत्रिम वातावरण का निर्माण कर रही है जहाँ किसी के साथ खुलकर हंसना बोलना रोना चिल्लाना आदि सारे मनोभाव स्वाभाविक रूप से अभिव्यक्त न होने के कारण लोगों को कुंठाग्रस्त कर रहे हैं।

हमें अगर किसी से कोई समस्या है और अगर हम किसी कारण से उससे न कह सकें तो दूसरों से कहकर तो मन हल्का कर ही सकते हैं, किन्तु अविश्वसनीय और स्वार्थी माहौल ने मन ही मन घुटना एक मजबूरी बना दिया है। हम जिस पर विश्वास करके अपना मन हल्का करते हैं वह उसे रिकार्ड करके प्रतिपक्षी का मन हमारे प्रति भारी कर आता है। क्षणिक भावों को स्थायी भाव बताकर प्रस्तुत करने वाले, वानर गुण वाले लोगों के हाथ में सोशल मीडिया का उस्तरा जब से हाथ में आया है तब से वे पहले से ज्यादा व्यस्त हो गए हैं। इधर की उधर भिड़ाकर लोगों को लड़ाने में, संघर्ष करवाने में और राग द्वेष भड़काने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

सोशल मीडिया सूचना तकनीकी क्रांति भले ही बहुत कुछ प्रदान कर रही है पर हमारे स्वाभाविक जीवन को तहस नहस भी कर रही है। इसका असर इतना अधिक है कि डिप्रेशन से आज मोक्ष के लिए तपस्यारत साधू समाज भी ग्रसित हो रहा है। आत्म शून्य क्रियाओं के चक्कर में वे स्वयं आत्म प्रवंचना के शिकार हो रहे हैं। जबरदस्ती दबाई गयी वासना और पवित्रता-पूज्यता का क्षद्म चोला ओढ़कर वे स्वयं को भगवान् समझने की भूल कर रहे हैं और यद्वा तद्वा विकृत सेक्स की घटनाओं में लगातार फंस भी रहे हैं।

कृत्रिम अभिव्यक्ति की छद्म आजादी वाला मोबाइल, इन्टरनेट, लैपटॉप भी उनके या उनके सहयोगी के हाथों में है जिनका वे प्रत्यक्ष या परोक्ष लगातार प्रयोग कर रहे हैं। इससे वे भी लगातार लोकेषणा, आत्म मुग्धता और आत्म प्रवंचना के शिकार हो रहे हैं। वे ध्यान कम करते हैं किन्तु उस मुद्रा की फोटो खिंचवा कर इन्टरनेट पर ज्यादा डालते हैं, पोस्टर छपवाते हैं। कभी कभी लगता है इस तरह के साधु हमसे ज्यादा अवसाद से ग्रसित हैं, लगातार मंच पर मुस्कु राते हुए बैठना और खुद को शांत रस की मूर्ति बनाकर प्रस्तुत करते रहना किसी गहरे तनाव से कम नहीं है। स्वयं किसी मंदिर या ट्रस्ट के नाम पर अकूत संपत्ति एकत्रित करते समय शास्त्र की ये पंक्तियाँ विस्मृत कर देते हैं कि अर्थ ही अनर्थ का मूल होता है - अत्थो अणत्थ मूलं।

सारा अध्यात्म सारे प्रवचन सारा ज्ञान सारा वैभव बेमानी लगने लग जाता है जब कोई संत कहलाने वाला बाहर से संपन्न मनुष्य आत्महत्या तक कर लेता है। काश अन्दर से संपन्न लोगों को समाज में संत कहा जाता और पूजा जाता तो संत आत्म हत्याओं से बच जाता और समाज लुटने से, इसलिए सहज अभिव्यक्ति एक योग चिकित्सा है जो मन के भावों को विकृत होने से, कुंठित होने से बचाती है। हम जिस समाज में जी रहे हैं वहां तमतमाते चेहरे को तो क्रोधी कहा जाता है लेकिन मुस्कुराते चेहरे के साथ जो जीवों की हत्याएं करते हैं, उनके अभिप्राय में छिपे अनंत क्रोध को हम भांप ही नहीं पाते हैं।

कुल मिलाकर बात इतनी है कि सहज योग वाले अध्यात्म को भी हमने इतना अधिक कृत्रिम और असहज बना दिया है कि अब सरलता के सारे रास्ते ही बंद से दिखाई दे रहे हैं। अध्यात्म योग दिखाने का नहीं अनुभव करने का मार्ग है। तभी हम सच्चा सुख और शांति प्राप्त कर सकते हैं।

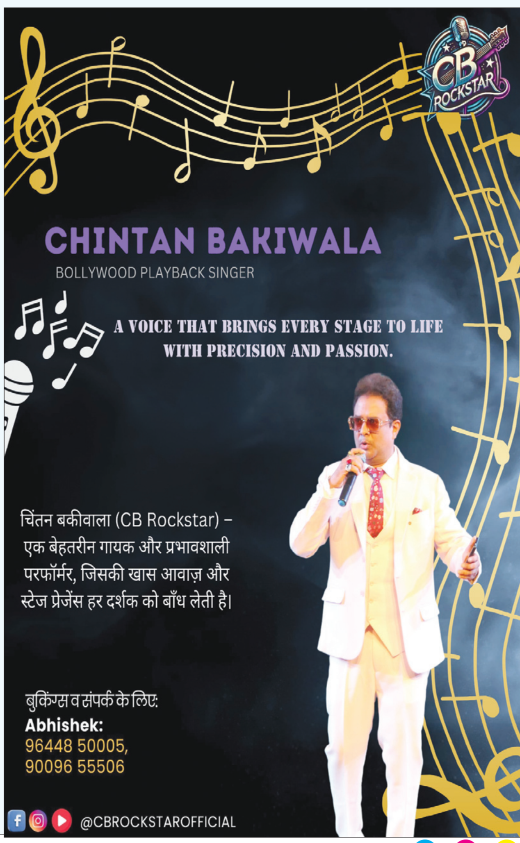

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगबर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एसप्रेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर लोर मिल्स कपाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सपादक -सुधेश कुमार जैन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009

कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबा. 08290950000

महामंत्री
प्रकाशचंद्र जैन बड़जात्या
Mob- 09840213132

कोषाध्यक्ष
पवन गोधा
मो. 9311198985

प्रधान सम्पादक
कपूरचन्द जैन (पाटनी)
मो. 09864118950, 0 9854050969
Email- k.c.jain39@gmail.com

परामर्शक सदस्य
शिवचरणलाल जैन, मैनपुरी
मो. 09219160350
सुरेश जैन 'सरल', जबलपुर
मो. 09425412374
बसन्त कुमार शास्त्री, शिवाड़
मो. 08107581334

सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com
dmahasabha@yahoo.com

सह सम्पादक (मानद)
डॉ. श्री महावीर शास्त्री, सोलापुर
मो. 09422457582
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
डॉ. सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108

लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344

दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से
कोरियर से मंगाने पर
अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र.
रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

'जैन गजट' में विज्ञापन
देने हेतु सम्पर्क-
7607921391, 7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल
jaingazette2@gmail.com
पर भेजें

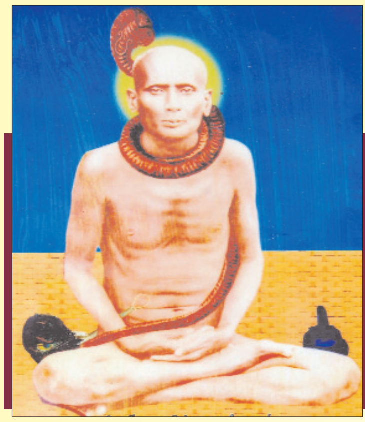

प्रथमाचार्य शांतिसागर व्रत

परम पूज्य चारित्र चक्रवर्ती प्रथमाचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज के आचार्य पद प्रतिष्ठापन शताब्दी महोत्सव (2024-25) के उपलक्ष्य में परम पूज्य पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधि आचार्य 108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज द्वारा सम्पूर्ण जैन समाज को संयम की प्रेरणा हेतु प्रदान किया गया एक व्रत का संकल्प

आचार्य पद प्रतिष्ठापन शताब्दी महोत्सव
13 अक्टूबर 2024 - 3 अक्टूबर 2025

36 एकासन का नियम

प्रतिमाह कम से कम एक या अधिकतम तीन

जाप्य: ॐ ह्रूँ प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर नमः।

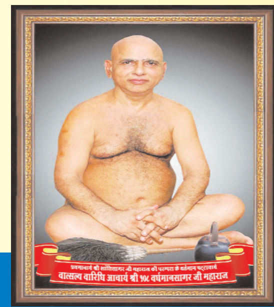

पूजन: प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की पूजा

प्रेरणा

सोहनलाल कासलीवाल
अध्यक्ष खण्डेलवाल दिग. जैन समाज पाण्डिचेरी

रिखबचन्द पाटोदी
अध्यक्ष
दिग. जैन समाज पाण्डिचेरी

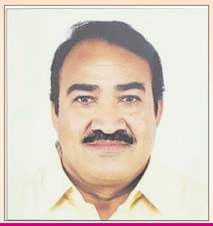

सोहनलाल पहाड़िया
पूर्व अध्यक्ष
दिग. जैन समाज पाण्डिचेरी

जितना जिनका प्रत्येक कार्य अद्भुत आकर्षण व महान व्यक्तित्व है, जिनका नाम स्मरण करते ही हृदय भक्ति से भर जाता है, उन आचार्य श्री की गौरव गाथा तो उनकी मुखाकृति पर ही अंकित थी। लिखने की चीज भी नहीं यह तो मनन व अध्ययन की चीज है। काश उन्हें हम ठीक-ठीक समझ पाते।

सर्पराज का उपसर्ग जिनकी तपस्या में खलल न डाल सका, असंख्य चीटियों का घंटों काटना, जिनके लिये मानसिक अशान्ति का कारण न बन सका, सिंहनिष्क्रीड़ित व्रत के लम्बे उपवास के समय ज्वर का प्रकोप जिनको शिथिलाचार की ओर ठेल न सका, कंचन और कामिनी जैसे मोहक पदार्थ जिनके संयम साधना में बाधक न बन सके उन योगिराज की आत्मा कितनी महान थी, यह सहज ही में अनुमान लगाया जा सकता है।

- शेखरचंद पाटनी

दानवीर नगरी पांडिचेरी के पुण्यार्जक/नमनकर्ता

स्व. श्री नथमल जैन

गौतमचंद विशाल सेठी (गौतम ज्वैलर्स)

श्रीमती मनफूल देवी जैन

श्री सन्मति विजया एवं रिद्धी सिद्धी महिला मण्डल

सुधान्शु कासलीवाल जयपुर

मदनलाल राजेन्द्र अरविन्द, मनोज सुनील कासलीवाल

हुलास चन्द सबलावत परिवार, रेडिप्रिन्ट जयपुर

सोहनलाल विदीत कासलीवाल
सोहनलाल पहाड़िया
मनीष मार्बल
दीप ज्वैलर्स (दीप कुमार बज)
चिरंजीलाल हेमंत शरद कासलीवाल
मनीष प्रणय सेठी
बुद्धराज, प्रसन्न, बिमल कासलीवाल

रिखबचंद पाटोदी
शांतिलाल लूणकरण रेशमा पाटनी
गजराज भरत सुशील कोठारी
चम्पालाल निरंजन कासलीवाल
धर्मचन्द शकुन्तला जैन व्रती श्रावक
आसूलाल भागचन्द कासलीवाल
गणपत कोठारी

निर्मल कुमार छाबड़ा गुवाहाटी
नवरत्नमल पाटनी अष्टम प्रतिमाधारी जयपुर
मोहनलाल सुनील कुमार डॉ. नितेश काला चेन्नई
भाग्यश्री सिल्क, चेन्नई
विजयकुमार कासलीवाल कुचीलवाले किशनगढ
अशोक चूड़ीवाल बरपेटा रोड, आसाम
श्रीमती सरोजदेवी पांड्या, गुवाहाटी

विज्ञापन प्रेषक: R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92

Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on Every Monday, wednesday and thursday

डाक पंजीयन संख्या :
SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh, Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233, 7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)

....
....
....

वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-,
दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।